प्रकाशक—
"साहित्य सदन"
आगरा।

मुद्रक—
सत्यव्रत शर्मा,

साहित्य-सरोवर

प्रवेशिका

सम्पादक—

देवकीनन्दन शर्मा, एम. ए., एल-एल. बी.,

प्रोफेसर, गवर्नमेण्ट कॉलिज, अजमेर।

रचयिता—

'सभा विज्ञान और वक्तृता,' 'रचना विधि'

'हिन्दी-साहित्य-सङ्कलन' इत्यादि।

संशोधित संस्करण

प्रकाशक—

साहित्य सदन

आगरा।

तृतीय बार] सन् १९३१

इस संस्करण में कई हेर-फेर कर दिये हैं, जिन के विषय में मुझे पाठकों से निवेदन करना है। टाइप बहुत मोटा लगा दिया गया है, जो छोटी कक्षाओं के छात्रों के लिये सर्वथा उपयुक्त है। बहुत से पुराने पाठ हटा दिये गये हैं और उनके स्थान पर नये रख दिये गये हैं। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा गया है कि पाठों में क्रमागत कठिनाई होती जाय। पुस्तक के पहले आधे भाग के पाठ (जो कक्षा ३ के लिए हैं।) पिछले आधे भाग के पाठों की अपेक्षा (जो कक्षा ४ के लिए हैं) अधिक सरल हैं। विशेष कठिनाइयों को समझाने के लिए यथास्थान टिप्पणियाँ जोड़ दी गई हैं। प्रश्न बहुत बढ़ा दिये गये हैं। कई नये चित्र भी जोड़ दिये गये हैं जिन में एक रंगीन है। आशा है इन कतिपय परिवर्त्तनों से पुस्तक की उपयोगिता बढ़ जायगी।

—सम्पादक

अध्यापकों के लिए भूमिका

इस पुस्तक को पढ़ाने के सम्बन्ध में मैं अध्यापकों से निम्नलिखित निवेदन करना चाहता हूँ, और आशा करता हूँ कि यह रुचिकर तथा लाभदायक सिद्ध होगा।

भाषा के अध्ययन के उद्देश्य संक्षेप में निम्नलिखित कहे जा सकते हैं:—

(१) विद्यार्थी के शब्द-कोश की उत्तरोत्तर वृद्धि हो।

(२) उसका उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट हो।

(३) उसका भाषा पर अधिकार बढ़े।

(४) उसमें स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो।

(५) उसके विस्तृत ज्ञान की वृद्धि हो।

इन उद्देश्यों को सामने रखते हुए कुछ-कुछ निम्नलिखित पाठन-विधि का प्रयोग किया जा सकता है:—

(१) पाठ में आये हुए कठिन शब्दों के उच्चारण श्याम-पट पर पूरी कक्षा से ठीक-ठीक कहलाये जायँ। कहने की नहीं कि शुद्ध उच्चारण भाषा का जीवन है। (२) फिर ... 'पैराग्राफ' या छन्द) किसी छात्र से ... जाय। (३) शब्दार्थ और भावार्थ ...दाहरण आदि के द्वारा समझा दिये ... पदों को ... नाये ... नये ... जिस

सम्बन्ध में आये हों उस से भिन्न सम्बन्ध में वे प्रयोग
जायँ । स्मरण रहे इस रीति से सीखने पर छात्र उनको
नहीं भूल सकते । (४) एक 'पैराग्राफ' या छन्द पढ़ने के प
उस पर छात्रों से प्रश्न पूछे जायँ, जिस से यह मालूम हो
कि वे उसका आशय कहाँ तक समझ सके हैं । (५) इसी प्रक
जब सम्पूर्ण पाठ समाप्त हो जाय तो पूरे पाठ पर भी प्रश्न पू
जायँ । अध्यापकों की सहायता के लिए कुछ ऐसे प्रश्न प्रत्येक
पाठ के नीचे दिये गये हैं । (६) निम्नलिखित साधनों के प्रयोग से
पाठ को समझने में विशेष सहायता मिलेगी—(क) 'रचना' के
लिए पाठ में आये हुए विषयों का प्रयोग किया जाय, जैसे—
निबन्ध, पत्र, कहानी आदि लिखना; (ख) लेख (इमला) के लिए
बहुधा पढ़े हुए पाठों से अंश लिए जायँ; (ग) व्याकरण-सम्बन्धी
प्रश्न पाठ के आधार पर पूछे जायँ, (घ) नाटक या वार्तालाप के
अंश विद्यार्थी कुल कक्षा के सम्मुख खेलें; (ङ) उत्तम कविताएँ
छात्रों को कण्ठस्थ करा दी जायँ ।

—सम्पादक

विषय-सूची

(कक्षा ३ के लिए)

(कक्षा ४ के लिए)

पाठ

चित्र सूची

साहित्य-सरोवर

प्रवेशिका

—⊛—

पाठ १

प्रार्थना

विनती सुन लो हे भगवान ।
हम सब हैं बालक नादान ॥
विद्या, बुद्धि नहीं कुछ पास ।
हमें बना लो अपना दास ॥
पैदा तुमने किया सभी को ।
रुपया-पैसा दिया सभी को ॥
—कर खड़े हुए हैं ।
हम पड़े हुए हैं ॥
बचाना ।
खूब सिखाना ॥

पढ़ा-पढ़ा पद पावेंगे हम ।
मिहनत कर दिखलावेंगे हम ॥
कितना भी बढ़ जावेंगे हम ।
तुम्हें नहीं बिसरावेंगे हम ॥
हमें सहारा देते रहना ।
खबर हमारी लेते रहना ॥
लो फिर शीस नवाते हैं हम ।
विद्या पढ़ने जाते हैं हम ॥

अभ्यास

१—नादान, पद और बिसरावेंगे शब्दों के अर्थ बतलाओ।
२—पाठ के शुरू की चार पंक्तियों का अर्थ समझाओ।
३—इस कविता को याद करके अपने गुरुजी को सुनाओ।
४—कोई और ईश्वर की प्रार्थना तुम्हें याद हो तो वह भी सुनाओ।
५—प्रार्थना करने से क्या लाभ है ?
६—पिछली आठ पंक्तियों में आये हुए संज्ञा शब्दों को छाँटो।

पाठ २

बुद्धदेव की कथा

१—पचीस सौ वर्ष हुए और श्रीरामचन्द्र से बहुत पीछे उसी अवध प्रान्त में एक दूसरे राज-कुमार का क्षत्रिय राजा के घर जन्म हुआ। वह भी ऐसा ही प्रसिद्ध हुआ है, जैसे श्रीराम-चन्द्रजी हैं।

इस राज-कुमार के पिता शाक्य वंश के राजा थे। वह बड़े वीर योद्धा थे। और उनकी यह इच्छा थी कि यह राज-कुमार भी, जो इनका इकलौता बेटा था, उन्हीं की भाँति योद्धा हो। इससे राज-कुमार को तीर चलाना, बर्छे और तलवार का काम सिखाया गया। गौतम बड़े सुन्दर थे, और उनके पिता और उनके कुल के लोग उनको बहुत मानते थे। उनका विवाह एक परम सुन्दरी राज-कन्या के साथ हुआ था और इनसे एक लड़का भी था।

२—उनका नाम गौतम था और उनको सिद्धार्थ भी कहते हैं। वह बचपन ही में बहुत सोचा करते थे। उनकी बोली बहुत ही मीठी थी।

उनका चित्त बड़ा कोमल था और वह बड़े दयालु थे। कभी अहेर को जाते और देखते कि निरपराध हरिण खेत में चर रहा है, तो चढ़ी कमान उतार लेते थे। वह अपने मन में कहते "मैं इन बेचारे जीवों को क्यों मारूँ ?" और बाण को तरकस में रखकर लौट आते। घुड़-दौड़ में घोड़े को हाँपता देखकर ठहर जाते, और कहते कि "खेल में हमारे हार जाने से क्या बिगड़ेगा। घोड़े को क्यों दुःख दिया जाय ?"

३—एक दिन वसन्त-ऋतु में उनके पिता ने उनसे कहा "चलो हरे-भरे खेत देखें।" दोनों बाप-बेटे सुन्दर सुहावने बाग़, बावली, हरे-हरे खेत, फलों से लदे पेड़ देखते चले जा रहे थे। गौतम को भी बड़ा आनन्द मिलता था। इतने में उनकी आँख एक हलवाहे पर पड़ी। यह हलवाहा एक बैल हाँक रहा था, जिसकी पीठ पर बड़ा सा घाव
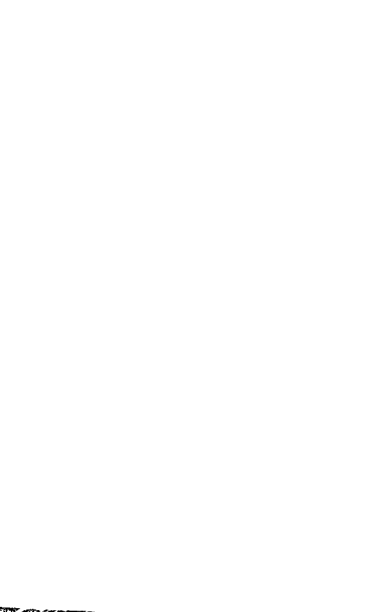
अन्त को यह समझे कि हमने सुख का मार्ग निकाल लिया।

६—ऐसा निश्चय करके यह वन से निकल आये और पैंतालीस वर्ष तक देश में घूम-घूमकर उन्होंने एक नये धर्म का प्रचार किया। उनको राजकुमारपन देखाने का कोई प्रयोजन न रह गया था। इस से उन्होंने अपना नाम बदल कर बुद्ध रख लिया जिसका अर्थ जागा हुआ या बुद्धिमान है। उनका धर्म बौद्धमत कहलाता

बुद्धदेव

है उनके जीते-जी लाखों भारतवासी उनके मत में आ गये। और उनके पीछे छः सौ वर्ष तक इस देश का प्रधान धर्म बौद्धमत ही था। उनके मरने पर सैकड़ों वर्ष तक उनके मत वाले उनको देवता

मानकर पूजने थे और उनकी बहुत सी मूर्तियाँ स्थापित की गईं।

७—बुद्धजी बड़े कारुणिक थे। उन्होंने यह सिखलाया कि जितने जीव-जन्तु हैं, सब पर दया करना हमारा धर्म है और उनको दुःख देना पाप है। उनका यह कथन है कि सब मनुष्य स्वतन्त्र और सब बराबर हैं और यदि लोग सब काम पाप न करें शुद्ध आचरण रक्खें तो नीच से नीच बड़े से बड़े के बराबर हो जायँ।

समाप्त

पाठ ३

घर

(१)

जिस घर में माँ दूध पिलाती।
जिसमें भोजन मुझे खिलाती॥
दे दे लोरी जहाँ सुलाती।
चिड़िया जहाँ सवेरे गाती॥
मेरा सब से प्यारा घर।
तीन लोक से न्यारा घर॥

(२)

पिता कभी जो घर को आते।
मेरे लिए खिलौने लाते॥
बड़े प्यार से मुझे खिलाते।
गोदी में लेकर यह गाते॥
मेरा सब से प्यारा घर।
तीन लोक से न्यारा घर॥

(३)

जिस घर में हैं मेला खाया-
फल-फूलों से जिसे सजाए

वैसा कहीं न मैंने पाया ।
गूँज उठा जब उसे सुनाया ॥
मेरा सब से प्यारा घर ।
तीन लोक से न्यारा घर ॥

(४)

दिन भर बाहर में थका-थकाया ।
शाम हुई अपने घर आया ॥
भूल गया दुख, मन हर्षाया ।
ईश्वर ने सुख-सदन बनाया ॥
मेरा सब से प्यारा घर ।
तीन लोक से न्यारा घर ॥

अभ्यास

१—तीसरे और चौथे छन्दों के अर्थ समझाओ ।
२—'तीन लोक से न्यारा'—इस से क्या समझते हो ?
३—'लोरी' उस गीत को कहते हैं जो छोटे बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं । इस पुस्तक के देखिये एक दो ऐसी लोरियाँ दी हुई हैं ।
४—हर्षाया और सुख-सदन के अर्थ समझाओ ।
५—'गूँज उठा'—यहाँ गूँजने से क्या मतलब है ? कुएँ पर जाइए । उसकी ओर मुँह करके ज़ोर से बोलने से आवाज़ लौटती है । वही लौटने वाली आवाज़ गूँज कहलाती है ।
६—अपने घर पर एक छोटा सा लेख लिखो ।

पाठ ४

समुद्र

पानी का सब से बड़ा ख़ज़ाना समुद्र है। क्या तुमने कभी समुद्र देखा है? बम्बई जाकर तुम समुद्र देख सकते हो। अगर तुम समुद्र के किनारे खड़े होकर उस की ओर देखो तो तुम को बड़ा ही विचित्र और सुहावना दृश्य दिखाई देगा। तुम्हारे सामने जहाँ तक तुम्हारी दृष्टि जायगी पानी ही पानी देख पड़ेगा। समुद्र के पानी का रंग नीला होता है। तुम जानते ही हो कि ऊपर आसमान का भी रंग नीला ही होता है। समुद्र के बीच में जहाज़ पर खड़े होकर देखने से ऐसा मालूम होता है कि मानो एक बहुत लम्बे-चौड़े नीले फ़र्श पर तुम्हारा जहाज़ खड़ा हुआ है, और ऊपर एक विशाल नीला गुम्बज बना हुआ है।

समुद्र के पानी का स्वाद बहुत बुरा होता है। इसमें बहुत-सा नमक घुला हुआ है। इसीलिए पीने में समुद्र का पानी बहुत खारी होता है। क्या तुम जानते हो कि यह नमक कहाँ से आया? थल पर मिट्टी में बहुत सा नमक मिला हुआ है। नदियाँ

स नमक को बहा कर समुद्र में ले आती हैं। ह नमक समुद्र में ही रहता है। इस काम को दियाँ लाखों वर्षों से करती आ रही हैं, इसलिए मुद्र में नमक का परिमाण बढ़ता ही जाता है। रन्तु यह नमक बड़े काम का होता है। नमकीन ानी में तैरने में बड़ी सुविधा होती है। इसलिए म किसी मीठे पानी की झील या नदी की अपेक्षा समुद्र में अधिक सुगमता से तैर सकते हैं। नमकीन पानी नहाने के लिए बहुत अच्छा होता है। मीठे पानी की अपेक्षा नमकीन पानी जमता भी देर में है।

समुद्र का पानी कभी स्थिर नहीं रहता। इस में छोटी छोटी लहरें तो सदा उठा ही करती हैं। ऐसी लहरें तुम किसी तालाब में कंकड़ डाल कर पैदा कर सकते हो। परन्तु समुद्र में प्रायः बड़ी-बड़ी लहरें देखने में आती हैं। ये तट पर आकर टकराती हैं। इन लहरों का दृश्य देखने में बड़ा सुहावना मालूम पड़ता है। ऐसा मालूम होता है कि मानों ये एक दूसरे का पीछा करती हुई तट की ओर चली आ रही हैं। प्रत्येक लहर धरती से टकरा कर गोल-सी हो जाती है, और उस में झाग उठते हैं। फिर उसका पानी किनारे पर फैल जाता

है। यह पानी फिर वापस आ जाता है, मानो वह दूसरी लहर का स्वागत करने जा रहा है। लहरें चमकीली और प्रसन्नचित्त मालूम होती हैं, जैसे खेलते हुए बालकों का समूह।

तुम स्वयं इस प्रकार की लहरें पैदा कर सकते हो। एक रस्सी या चादर को तान कर खड़े हो जाओ और एक सिरे को ऊपर-नीचे हिलाओ, तो ऐसी ही लहरें पैदा हो जायँगी।

कभी-कभी समुद्र में लहरें बीस-बीस पचीस-पचीस फ़ुट ऊँची उठती हैं, और किनारे पर बड़े ज़ोर से फटती हैं। इन के फटने का शब्द बहुत दूर तक सुनाई देता है। इन से किनारे की धरती धीरे-धीरे टूटा करती है और किनारे पर पड़े हुए पत्थर एक-दूसरे से बड़ी ज़ोर से टकराते हैं। हमारे देश के समुद्र-तट पर भी ऐसी ही लहरें सदा देखने में आती हैं। झागों के कारण इन का ऊपरी भाग सफ़ेद देख पड़ता है।

समुद्र धरती के किनारे पर प्रायः कम गहरा होता है। परन्तु थल से कुछ दूर चलकर इसकी गहराई बहुत अधिक हो जाती है। कई स्थानों पर तो इस का पानी ५ मील से भी अधिक गहरा

सड़क का काम देता है, जिस पर आने जाने में कम समय लगता है और व्यय भी कम पड़ता है। समुद्र एक ऐसी सड़क है। जो प्रकृति ने बनाई
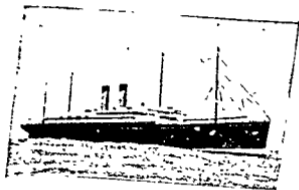
समुद्र पर जहाज़

, और साधारण सड़कों की तरह इसकी मरम्मत ी भी आवश्यकता नहीं होती। आगरे से बंबई वल ८०० मील दूर है और बम्बई से लन्दन ,५०० मील की दूरी पर है। परन्तु तुमको यह न कर आश्चर्य होगा कि आगरे से बम्बई माल जाने में जितना किराया देना पड़ता है, उससे न बम्बई से लन्दन ले जाने में पड़ता है। जहाज़ बैठ कर बम्बई से लन्दन पहुँचने में १५ दिन

मिल जाता है। वही भाप फिर पानी के रूप में बदल जाती है। पानी नीचे गिर पड़ता है, जिसे हम वर्षा कहते हैं। वर्षा से ही पेड़-पौधे पनपते हैं और खेतों में अन्न उपजता है। यदि खाने को अन्न न मिले तो भला हम कैसे जीवित रह सकते हैं! इस प्रकार हम भोजन के लिए समुद्र पर ही निर्भर हैं।

अभ्यास

१—खज़ाना शब्द से क्या समझते हो? समुद्र को 'पानी खज़ाना' क्यों कहा गया है?

२—समुद्र का पानी खारी क्यों होता है?

३—बीच समुद्र में पहुँच कर कैसा दृश्य दिखाई देता है?

४—समुद्र से हम को क्या-क्या लाभ हैं?

५—समुद्र में रहने वाले कुछ जीव-जन्तुओं के नाम बताओ

६—गुम्बज किसे कहते हैं? क्या तुम ने किसी इमारत गुम्बज देखा है?

७—नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो—
विचित्र, सुविधा, अपेक्षा, स्थिर, स्वागत, अधि आक्रमण, निर्भर।

८—अन्तिम पैराग्राफ़ से आई हुई

पाठ ५

चिड़ियाँ

(१)

चिड़ियाँ हैं लुभावनी होती,
बहुत सजीली, बहुत सँवारी।
उनके पर हैं सुन्दर प्यारे,
रखती हैं बहु रंगत न्यारी॥

(२)

बड़े प्यार से उनको देखो,
रीझ रीझ कर उन्हें रिझाओ।
सुनो चहकना उनका चित से,
उनकी चालों पर ललचाओ।

(३)

जब वे हों पेड़ों पर गाती,
उनसे गला मिलाकर गाओ॥
देख फुदकना उनका फुदको,
उमँग बड़ी फूले न समाओ।

(४)

वे हैं बड़ी भली फुरतीली,
खुली हवा में रहने वाली।

अपने रंग ढंग में डूबी,
मृग-लहरों में बहने वाली ॥

(५)

उन्हें सताओ नहीं, न छेड़ो,
वे न जायँ पिंजरों में पाली ।
उनकी जाय न डाली छीनी,
हरी-भरी फल-फूलों वाली ॥

(६)

जिन से मसल जाय कोई दिल,
ऐसे कामों से मुँह मोड़ो ।
धूल में मिला देने ही को,
कोई फूल कभी मत तोड़ो ॥

अभ्यास

१—चिड़ियों के विषय में कौन-कौन सी बातें इस कविता में बतलाई गई हैं ?
२—एक छोटा सा लेख चिड़ियों पर लिखो जिस में उन के प्रकार, उन के घोंसले, उनका भोजन, उन के बच्चे, उन का गाना आदि का वर्णन हो ।
३—ऐसे कामों से मुँह मोड़ो—कैसे कामों से ?
४—लुभावनी, सजीली और रिझाना शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।
५—यह कविता बड़ी रसीली है । इसे कण्ठस्थ कर लो ।
६—छठे छन्द में आये हुए सर्वनाम शब्दों को छाँटो ।

उपाय करना चाहिए कि ये कुत्ते यहाँ से हट जायँ, फिर तो मज़ा ही मज़ा है।" और सबने सलाह कर भेड़ों के पास एक दूत भेजा।

दूत महाशय भेड़ों के पास गये और बोले—"देखो हम लोग एक ही जगह रहते हैं, पर कैसे अफ़सोस की बात है कि हम में तनिक मेल नहीं! क्या पड़ोस में रह कर भी ऐसा करना चाहिए? चाहिए तो यह कि हम लोग खूब हेल-मेल से रहें। साथ-साथ उठें-बैठें, जङ्गल में खूब घूमें और मज़े से मौज करें। पर ये कुत्ते बड़े ही शैतान हैं, सारे झगड़े की जड़ ये ही हैं। भाई ये तो रात भर ऐसा चिल्लाते हैं कि कान बहरे हुए जाते हैं। हम लोगों को इनसे बड़ी ही तकलीफ़ है। यदि ये यहाँ से हटा दिये जावें, तो कैसा आनन्द रहे। फिर तो समझो, टंटा-बखेड़ा ही चल बसा—हम लोगों में मेल ही मेल है।

मूर्ख भेड़ें भेड़ियों की मीठी-मीठी बातों में आ गईं। वे भेड़ियों की चाल न समझ सकीं। उन्होंने उसी दिन लड़-झगड़ कर कुत्तों को भगा दिया। अब उनका कोई रखवाला न रहा। भेड़ियों

की बन आई। उन दुष्टों ने एक-एक करके सभी भेड़ों को कलेवा कर डाला।

यदि भेड़ें पहले ही से सोच-समझकर काम करतीं तो इस तरह उनका नाश न होता। इसलिए जो काम करो, खूब सोच-विचार कर करो।

अभ्यास

१—भेड़ों ने क्या मूर्खता की, और उसका क्या नतीजा हुआ?
२—इस पाठ से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?
३—पञ्चायत, शैतान और इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।
४—दाल न गलना, मन मार कर रह जाना, टंटा-बखेड़ा करना; चल बसना, कलेवा कर डालना—इन मुहाविरों को अपने बनाये हुए वाक्यों में इस्तैमाल करो।
५—सबसे अच्छी कहानी जो तुमको याद हो सुनाओ।
६—पहले अनुच्छेद में आने वाले संज्ञा शब्दों को छाँटो।

पाठ ७

आँधी

(१)

देखो कौन कहाँ से आती,
आती है या शोर मचाती,

दानव* ने क्या करी चढ़ाई ?
नहीं-नहीं, यह आँधी आई।
(२)

हुआ घोर कोलाहल भारी,
धूल-धूसरित चीज़ें सारी;
बादल भी देखो घिर आये,
दौड़-दौड़ कर रंग जमाये।
(३)

चौपाये सब भाग रहे हैं,
सोते थे सो जाग रहे हैं;
मिलजुल लड़के शोर मचाते,
आँधी पानी का गुण गाते।
(४)

देखो, यह क्या टूट रहा है ?
हाय ! हाय ! अंधेर महा है;
पेड़ों को यह तोड़ रही है,
कृषकों का सिर फोड़ रही है।
(५)

(६)

कितने फल भी पड़े हुए हैं,
कुछ पेड़ों में अड़े हुए हैं;
लड़के बीन बीन कर खाते,
हँसते मिल-जुल मौज उड़ाते।

(७)

झोंके वायु के चलते हैं,
मानो बम ओले गलते हैं;
नारी, नर, बालक बेचारे,
काँप रहे हैं डर के मारे।

अभ्यास

१—ज़ोर की आँधी के पीछे जो दृश्य दिखाई देता है उस की कल्पना करो, और उसे अपने शब्दों में लिखो।

२—कोलाहल, धूल-धूसरित, रंग जमाना, गैंडहर, ओले गलना और डर से काँपना से क्या समझते हो ?

३—वायु शब्द का शुद्ध रूप क्या है ?

४—(क) आँधी को दानव क्यों कहा गया है ?
(ख) छप्परों का सिर फोड़ रही है—यह कैसे ?

५—तीन शब्द ऐसे बताओ जिनका अर्थ वही हो जो 'वायु' का। ऐसे शब्द 'समानार्थी' या 'पर्यायवाची' शब्द कह लाते हैं।

दानव* ने क्या करी चढ़ाई ?
नहीं-नहीं, यह आँधी आई।

(२)

हुआ घोर कोलाहल भारी,
धूल-धूसरित चीजें सारी;
बादल भी देखो घिर आये,
दौड़-दौड़ कर रंग जमाये।

(३)

चौपाये सब भाग रहे हैं,
सोते थे सो जाग रहे हैं;
मिलजुल लड़के शोर मचाते,
आँधी पानी का गुण गाते।

(४)

देखो, यह क्या टूट रहा है ?
हाय ! हाय ! अंधेर महा है;
पेड़ों को वह तोड़ रही है,
कृषकों का सिर फोड़ रही है।

(५)

कितने घर खँडहर दिखलाते,
खपड़ेले क्यों दृष्टि न आते ?
यह आँधी का सारा काम,
भागी करके अपना काम।

---

*...: असुर।

लिए उस में चूना मिलाया जाता है, जिस से रस में मिली हुई बहुत-सी वस्तुएँ नीचे बैठ जाती हैं और चूना मिला रस ऊपर रह जाता है। इस रस को अलग करके फिर उस में गंधक का धुआँ दिया जाता है, जिस से कि रस में जो चूना मिला है, उस का चूनापन मर जाय और साथ ही साथ रस का रङ्ग भी फीका पड़ जाय। इस के बाद रस खूब खौलाया जाता है, जिस से कि मैल फूल जाता है और बहुत जल्दी नीचे बैठ जाता है, और बिल्कुल साफ़ शक्कर बनाने योग्य रस ऊपर रह जाता है। यह साफ़ रस धीरे-धीरे थिरा-थिरा कर निकाल लिया जाता है और फिर इसी को खौला कर गाढ़ा कर के शक्कर का दाना बनाया जाता है। पहले दाना बहुत छोटा होता है, और इसी लिए कारख़ाने वाले धीरे धीरे गाढ़ा करते जाते हैं और रस मिलाते जाते हैं। इस प्रकार गाढ़ा करने से रस में वैसा ही बड़ा दाना पड़ जाता है, जैसा बड़ा दाना हम बाज़ार की शक्कर में देखते हैं। किन्तु यह दाना अभी इस अवस्था में नहीं होता कि इसे प्रयोग में लाया जा सके, क्योंकि दाने के साथ शीरा, जो कि रस

पाठ ८

शक्कर

क्या तुम जानते हो कि जो मिठाई हम लोग रोज़ खाते हैं, उस में मिठास कहाँ से आती है? यह मिठास शक्कर मिलाने से होती है। दूध, दही इत्यादि को मीठा बनाने के लिए भी हम लोग उस में शक्कर छोड़ते हैं। बिना शक्कर पड़ा हुआ दूध बिल्कुल सीठा मालूम पड़ता है। क्या तुम यह बता सकते हो कि शक्कर कैसे बनती है? अच्छा सुनो, मैं बतलाता हूँ। शक्कर, जिसे कि तुम रोज़ खाते हो, ऊख या गन्ने से बनाई जाती है। ऊख या गन्ने जब खेतों में पक जाते हैं, तो किसान लोग उन्हें काट कर गाड़ियों में लाद-लाद कर मिलों में ले जाते हैं। वहाँ उन्हें पेर कर रस निकाला जाता है और जो सिट्ठा (लकड़ी का हिस्सा जो पेरने के बाद रह जाता है) बचता है, वह जलाने के काम में लाया जाता है। ऊख पेरने से जो रस निकलता है। वह बहुत मैला होता है और उस में रङ्ग, मोम इत्यादि वस्तुएँ मिली रहती हैं। इन सब को इस से अलग करने के

शक्कर बनाते समय आप ही आप बन जाता
, उसी के चारों ओर लपटा रहता है। लोग
से राब कहते हैं। यदि हम राब से मिठाई
नावें तो वह बहुत ख़राब होगी। न तो उस में
ताफ़ शक्कर की बनी मिठाई का सा स्वाद ही
होगा और न देखने में ही वह उतनी अच्छी
होगी। राब से रसगुल्ले, इमरती, और जलेबी
इत्यादि नहीं बन सकते। इसीलिए राब को
मशीनों में, जो कि बहुत तेज़ी से घूमती हैं,
डाल कर दाना अलग कर दिया जाता है। फिर
यह दाना सुखा कर बोरों में भर दिया जाता है।
यही बाज़ार में बिकने वाली दानादार शक्कर कह-
लाती है। इसी को पीस देने से पिसी हुई शक्कर
बन जाती है।

कहीं-कहीं गन्ने के बजाय गुड़ से शक्कर बनायी
जाती है, क्योंकि राब की तरह गुड़ से भी अच्छी
मिठाई नहीं बन सकती। गुड़ से शक्कर बनाने में
पहले गुड़ गला कर रस की तरह पतला बना
लिया जाता है। फिर जिस भाँति से गन्ने के रस
से शक्कर बनायी जाती है, उसी प्रकार गुड़ से
... भी शक्कर तैयार की जाती है।

(२)

लाठी में गुन बहुत हैं, सदा राखिए सङ्ग।
गहिरी नदि नारा जहाँ तहाँ बचावै अङ्ग॥
तहाँ बचावै अङ्ग झपट कुत्ता को मारे।
दुसमन दावागीर होय ताहू को झारे॥
कह 'गिरिधर' कविराय सुनो हो धूर के बाटी।
सब हथियारन छाँड़ि हाथ महँ लीजै लाठी॥

(३)

दौलत पाय न कीजिये सपने में अभिमान।
चञ्चल जल दिन चारि को ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजै।
मीठे बचन सुनाय विनय सबही की कीजै॥
कह 'गिरिधर' कविराय अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निशि दिन चार रहत सबही के दौलत॥

(४)

बिना विचारे जो करै सो पाछे पछिताय।
काम बिगारै आपनो जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय चित्त में चैन न पावै।
खान पान सन्मान राग-रँग मनहिं न भावै॥
कह 'गिरिधर' कविराय दुःख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माहिं कियो जो बिना विचारे।

(५)

गुन के गाहक सहस नर बिनु गुन लहै न कोइ।
जैसे कागा कोकिला शब्द सुनै सब कोइ॥
शब्द सुनै सब कोइ कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इक रंग काग सब भये अपावन॥
कह 'गिरिधर' कविराय सुनो हो ठाकुर मन के।
बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुन के॥

अभ्यास

१—पहली और पाँचवीं कुण्डलिया के अर्थ लिखो।
२—प्रत्येक कुण्डली से तुमको क्या शिक्षा मिलती है?
३—गुन, सपना, घाटि, कोइ इनके शुद्ध रूप बताओ।
४—'ठाकुर मन के' से क्या समझते हो?
५—ये छन्द बड़े सुन्दर और उपदेश पूर्ण हैं। इन्हें कण्ठस्थ कर लो।

पाठ १०

रीछ का शिकार

हम एक दिन रीछ के शिकार को निकले, मेरे साथी ने एक रीछ पर गोली चलाई, पर गहरी नहीं लगी, रीछ भाग गया, भूमि पर लोहू के चिह्न बाकी रह गये।

हम एकत्र हो कर यह विचार करने लगे कि तुरंत पीछा करना चाहिए, या दो-तीन दिन ठहर कर उसके पीछे जाना चाहिए। किसानों से पूछने पर एक बूढ़ा बोला—तुरन्त पीछा करना ठीक नहीं. रीछ को टिक जाने दो. पाँच दिन पीछे शायद वह मिल जाए, अभी पीछा करने पर तो वह डर कर भाग जायगा।

इस पर एक जवान बोला—नहीं-नहीं, हम आज ही रीछ को मार सकते हैं. वह बहुत मोटा है, दूर नहीं जा सकता, सूर्य अस्त होने से पहिले कहीं-न-कहीं टिक जायगा। नहीं तो मैं बर्फ़ पर चलने वाले जूते पहन कर उसे ढूँढ निकालूँगा।

मेरा साथी तुरन्त रीछ का पीछा करना नहीं चाहता था, पर मैंने कहा—झगड़ा करने से क्या मतलब, आप लोग गाँव को जाइये। मैं और दुर्गा (मेरे सेवक का नाम है) रीछ का पीछा करते हैं। मिल गया तो वाह-वाह, दिन भर और करना ही क्या है?

और सब तो गाँव को चले गये, हम और दुर्गा जंगल में रह गये। अब हम बन्दूकें सम्हाल, कमर कस, रीछ के पीछे हो लिये।

सड़क की तरफ़ थीं । मैंने पूछा कि 'दुर्गा क्या यह कोई दूसरा रीछ है ?'

दुर्गा—नहीं, यह वही रीछ है, उस ने धोखा दिया है ।

आगे चल कर दुर्गा का कहना सत्य निकला, क्योंकि रीछ दस क़दम सड़क की ओर आकर फिर जंगल की ओर लौट गया था ।

"अब हम उसे अवश्य मार लेंगे । आगे दल-दल है, वह वहीं जाकर बैठ गया है; चलिये ।"

हम दोनों आगे बढ़े । कभी-कभी तो मैं किसी झाड़ी में फँस जाता था । उस कटीली पृथ्वी पर चलने का अभ्यास न होने के कारण थक करके पसीने से भीग कर मैंने कोट कंधे पर डाल लिया, लेकिन दुर्गा बड़ी फुर्ती से चला जा रहा था । दो मील चल कर हम झील के उस पार पहुँच गये ।

दुर्गा—देखो, सामने झाड़ी पर चिड़ियाँ बोल रही हैं, रीछ वहीं है । चिड़ियाँ रीछ के पास रही हैं ।

हम वहाँ से हट कर आध मील चले होंगे फिर रीछ का पंजा दिखाई दिया । मुझे इतना

पसीना आ गया कि मैंने साफ़ा भी उतार दिया। दुर्गा को भी पसीना आ गया था।

दुर्गा—स्वामी, बहुत दौड़-धूप की; अब ज़रा विश्राम कर लीजिये।

संध्या हो चली थी, हम जूते उतार कर धरती पर बैठ गये और भोजन करने लगे। भूख के मारे रोटी ऐसी अच्छी लगी कि मैं कुछ कह नहीं सकता। मैंने दुर्गा से पूछा कि गाँव कितनी दूर है?

दुर्गा—कोई आठ मील होगा, हम आज ही वहाँ पहुँच जायँगे। आप कोट पहन लें, ऐसा न हो, सरदी लग जाए।

दुर्गा ने जगह ठीक करके उस पर झाड़ियाँ बिछा कर मेरे वास्ते बिछौना तैयार कर दिया। मैं ऐसा बेसुध सोया कि इस का ध्यान ही न रहा कि कहाँ हूँ। जाग कर देखा कि एक बड़ा भारी दीवान खाना बना हुआ है। उस में बहुत से उजले चमकते हुए खंभे लगे हुए हैं। उसकी छत नभ की तरह काली है। उस में रंगदार अनन्त दीपक जगमगा रहे हैं। मैं चकित हो गया, परन्तु तुरन्त मुझे याद आई कि यह तो जंगल है, यहाँ दीवानखाना कहाँ! असल में श्वेत खंभे तो बर्फ़ से ढके हुए

वृक्ष थे, रँगदार दीपक उन की पत्तियों में से चम
कते हुए तारे थे।

बर्फ़ गिर रही थी, जंगल में सन्नाटा था।
अचानक हमें किसी जानवर के दौड़ने की आहट
मिली। हम समझे कि रीछ है, परन्तु पास जाने
पर मालूम हुआ कि जंगली ख़रहे हैं। हम गाँव
की ओर चल दिये। बर्फ़ ने सारा जंगल श्वेत बना
रक्खा था। वृक्षों की शाखाओं में से तारे चमक
और हमारा पीछा करते ऐसे दिखाई देते थे कि
मानो सारा आकाश चलायमान हो रहा है।

जब हम गाँव में पहुँचे, तो मेरा साथी सो
या था। मैंने जगा कर सारा वृत्तान्त कह
नाया, और ज़मींदार से अगले दिन के वास्ते
कारी एकत्र करने को कह, भोजन करके सो
। मैं इतना थक गया था कि यदि मेरा साथी
न जगाता, तो मैं दोपहर तक पड़ा सोया
। जाग कर मैंने देखा कि साथी वस्त्र पहने
है और अपनी बन्दूक़ ठीक कर रहा है।

—दुर्गा कहाँ है?

थी—उसे गये देर हुई, वह कल के निशान
ारियों को इकट्ठा करने गया है।

उठा, वह उठा—।" इस पर सब शिकारी बोल उठे, सारा जंगल गूँज पड़ा। मैं ध्यान ही में था कि रीछ दिखाई पड़ा और मैंने तुरन्त गोली छोड़ी।

अकस्मात् बाईं ओर बर्फ़ पर कोई काली चीज़ दिखाई दी। मैंने गोली छोड़ी, परन्तु खाली गई और रीछ भाग गया।

मुझे बड़ा शोक हुआ कि अब रीछ इधर न आयगा। शायद साथी के हाथ लग जाय। मैंने फिर बन्दूक भर ली, इतने में एक शिकारी ने शोर मचाया कि "यह है, यह है, यहाँ आओ।"

मैंने देखा कि दुर्गा भाग कर मेरे साथी के पास आया और रीछ को उँगली दिखाने लगा। साथी ने निशाना लगाया। मैंने समझा उसने मारा, परन्तु वह गोली भी खाली गई, क्योंकि यदि रीछ गिर जाता, तो साथी अवश्य उसके पीछे दौड़ता, पर वह दौड़ा नहीं, इससे मैंने जाना कि रीछ मरा नहीं।

हैं! यह क्या आपत्ति आई, देखता हूँ कि रीछ डरा हुआ अन्धाधुन्ध भागा मेरी ओर आ रहा है। मैंने गोली मारी, परन्तु खाली गई

दूसरी छोड़ी, वह लगी तो सही, परन्तु रीछ गिरा नहीं। मैं दूसरी बन्दूक उठाना ही चाहता था कि उसने झपटकर मुझे दबा लिया और लगा मेरा मुँह नोचने। जो कष्ट मुझे उस समय हो रहा था, मैं उसे वर्णन नहीं कर सकता ऐसा प्रतीत होता था कि मानो कोई छुरियों से मेरा मुँह छील रहा है।

इतने में दुर्गी और साथी रीछ को मेरे ऊपर बैठा देख कर मेरी सहायता को दौड़े। रीछ उन्हें देख, डर कर भाग गया। सारांश यह कि मैं घायल हो गया पर रीछ हाथ न आया और हमें खाली हाथ गाँव को लौटना पड़ा।

एक मास पीछे हम फिर उस रीछ को मारने के लिए गये। मैं फिर भी उसे न मार सका। उसे दुर्गी ने मारा। वह बड़ा भारी रीछ था। उसकी खाल अब तक मेरे कमरे में बिछी हुई है।

अभ्यास

१—देखो इस पाठ में शिकार का जो वर्णन किया गया है वह कितना सुन्दर है। पढ़ते समय ऐसा मालूम होता है मानो सारा दृश्य तुम्हारी आँखों के सामने ही हो रहा है।
२—रीछ का यह शिकारी ने कैसे मारा ?

—दुर्गा कौन था? उसने क्या-क्या काम किये ?
—जब रीछ शिकारी पर झपटा, तो शिकारी के प्राणों की रक्षा किस प्रकार हुई ?
—नीचे लिखे हुए शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो — एकत्र, अस्त, तुरन्त, प्रतीत, विश्राम, घात, अनन्त, अचानक, वृत्तान्त ।
—बन्दूक़ का कौनसा भाग घोड़ा कहलाता है ?
—दलदल से तुम क्या समझते हो ? हमारे देश में दलदल कहाँ मिलते हैं और क्यों ?
—अपनी भाषा में बताओ कि जंगली हाथी कैसे पकड़े जाते हैं।
—अन्तिम अनुच्छेद में आये हुए अव्यय बतलाओ ।

पाठ ११

मोर

ो सलोने मोर ! पंख अति सुन्दर तेरे,
रंगित चंदा लगे गोल अनमोल घनेरे ।
, सुनहला, चटकीला, नीला रंग सोहे,
रेशम के सम मृदुल बनावट मन को मोहे ॥
[पर सुघर किरीट, नील कल कंठ सुहावे,
पंख उठा कर नाच तेरा, अति जी को भावे ।

केका* करके विदित श्रवणप्रिय तेरी बानी,
ज़रा सुना तो सही वही हमको रससानी ॥

मोर

बादल जब दल बाँध गगन तल पर घिर आवैं,
श्याम-घटा की छटा सकल थल पर छा जावै ।
तब तू हो मद-मस्त, मेघ को नृत्य दिखावै,
अति प्रमोद मन मान हर्ष के अश्रु बहावै ॥
ऐसा अपना नाच दिखा हम को भी प्यारे,
जिसे देख, हे मोर मोद मन होय हमारे ॥

अभ्यास

१—इस कविता में मोर की सुन्दरता के विषय में कवि ने कौन-कौन सी बातें कही हैं ?
२—नीचे लिखे हुए शब्दों के अर्थ समझाओ—
विदित, श्रवणप्रिय, प्रमोद, अश्रु ।

* मोर की बोली ।

३—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—
अनमोल, गगन, छटा और हर्ष।

४—सुघर का शुद्ध रूप क्या है ?

५—इस पाठ के साथ आये हुए चित्र में जो कुछ देखते हो उ
अपनी भाषा में लिखो।

६—इस कविता को याद कर लो।

७—तोता पर एक छोटा सा लेख लिखो।

८—इस पाठ मे आये हुए विशेषण शब्दों को छाँटो।

पाठ १२

रानी दुर्गावती

दुर्गावती महोबे के चंदेले राजा शालिवाहन की पुत्री थी। उसका विवाह गढ़ा-मंडला के गोंड-राजा दलपतिशाह के साथ हुआ था। विवाह के कुछ ही समय बाद वह विधवा हो गई, इस कारण सब राज-काज उसी को सँभालना पड़ा, क्योंकि उस का पुत्र वीरनारायण अभी बचा था।

दुर्गावती के राज में प्रजा सब भाँति सुखी थी। न तो रानी और न कोई और ही दीनों को दुःख देता था। यदि कोई देता भी था, तो रानी ऊँच-नीच का विचार न कर, उसे दण्ड देती थी।

वह शस्त्र-विद्या में बड़ी निपुण थी और पराक्रमी भी ख़ूब थी। लड़ाई में सेना के साथ स्वयं जाती थी और हाथी पर सवार हो कर, या जैसा भी अवसर हो, लड़ती थी। उसने इधर-उधर के कई देश जीत कर अपने राज में मिला लिये थे।

जिस देश में इस प्रकार सुख और शान्ति रहे वहाँ धन की क्या कमी? छोटे और बड़े सभी चैन की बंसी बजाते थे, कोई भूखा न सोता था, और न किसी को किसी वस्तु के लिए तरसना पड़ता था। परन्तु प्रजा का यह सुख बहुत दिनों तक न रहा, क्योंकि बादशाह अकबर ने जब गढ़ा-मंडला की दौलत और रानी की प्रशंसा सुनी, तब उसने आसफ़ ख़ाँ को पचास हज़ार सवार और सिपाही, और बहुत-सी तोपें दे कर दुर्गावती से युद्ध करने के लिए भेजा। भला रानी कब डरने वाली थी? वह भी सात-सौ हाथी और पचास हज़ार योद्धा लेकर मैदान में आ डटी। जब लड़ाई हुई, तब रानी ने अनोखी वीरता दिखाई। परिणाम यह हुआ कि ख़ाँ साहब के सिपाहियों के पैर उखड़ गये और वे लड़ाई से भाग खड़े हुए। दूसरे दिन ख़ाँ साहब ने फिर

हमला किया । उनकी तोपें आग उगलने लगीं । बेचारी रानी के पास तोपखाना था नहीं । तो भी उस ने बड़ा साहस दिखलाया । तोपों की भयंकर मार से जब उस के सिपाही भागने लगे, तब उस ने उन को बहुत धिक्कारा । कायरों के भाग जाने पर कुछ चुने हुए वीर बच रहे । उन को साथ लेकर रानी ने बादशाही फ़ौज से खूब मोर्चा लिया । बालक वीरनारायण ने भी कई बार शत्रुओं के दाँत खट्टे किये और उन्हें दूर तक खदेड़ा । अन्त में बादशाही फ़ौज ने उस बेचारे को चारों ओर से घेर कर घायल कर दिया । अपने घायल और बेहोश पुत्र को देख कर रानी हर्ष से गद्गद हो गई और दूने साहस से युद्ध करने लगी । इस समय उस के साथ केवल ढाई-सौ तीन-सौ वीर रह गये थे । कहाँ ये थोड़े से योद्धा और कहाँ शत्रु के हज़ारों सिपाही ! लड़ते-लड़ते रानी की आँख और गर्दन में एक तीर लगा । उस के कई योद्धाओं ने इस समय उसे क़िले में चले जाने की सलाह दी, परन्तु रानी ने कहा कि युद्ध में पीठ दिखाना क्षत्रियों का धर्म नहीं । वह वहीं डटी रही । अन्त में जब उस ने देखा कि अब

विजय की आशा करना व्यर्थ है, तब हाथी हाँकने का अँकुश लेकर अपने पेट में मार लिया और प्राण छोड़ दिये। इस समय उसके पास केवल छः वीर रह गये थे जो अपनी जान हथेली पर रख कर बादशाही सेना पर टूट पड़े और अनेक शत्रुओं को मारते हुए स्वर्ग को सिधारे।

दुर्गावती के मारे जाने पर आसफ़ ख़ाँ ने क़िले को चारों ओर से घेर लिया। बालक वीर-नारायण दो महीने तक बड़ी वीरता के साथ क़िले की रक्षा करता रहा। अन्त में मारा गया। उस के मरते ही बचे-खुचे राजपूत मरने का विचार करके क़िले से बाहर निकल आये और बादशाही फ़ौज से भिड़ गये। उधर क़िले में स्त्रियों ने बहुत-सा सामान इकट्ठा कर के उस में आग लगा ली और बच्चों समेत उसी आग में जल मरीं। इधर एक भी राजपूत जीता न बचा। यों गढ़ा-मंडला का राज अकबर के हाथ आया।

अभ्यास

१—रानी दुर्गावती कौन थी?
२—उस के राज्य में प्रजा की दशा कैसी थी?
३—अकबर ने रानी से क्यों युद्ध किया?

४—इस युद्ध का वर्णन करो।

५—रानी ने आत्म-हत्या क्यों कर ली ?

६—नीचे लिखे मुहाविरों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—

चैन की वंशी बजाना, मोर्चा लेना, पैर उखाड़ना, पीठ दिखाना और टूट पड़ना।

७—निपुण, पराक्रमी, व्यर्थ—इन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

८—'परिणाम' और 'परिमाण' में क्या अन्तर है ?

—अपने देश की किसी और रानी की वीरता का वर्णन लिखो।

—अन्तिम अनुच्छेद से अव्यय शब्द छाँटो।

पाठ १३

मेरी पुस्तक

ी पुस्तक प्यारी, है मुझे बहुत उपकारी ॥
ा ज्ञान है देती, जड़ता मति की हर लेती।
की नौका खेती, यह करती है हित भारी॥१॥
उदासी होती, मन की थिरता है सोती।
है श्रम खोती, हो सब प्रकार दुखहारी॥२॥
बुरा है सहती, पर अच्छी बातें कहती।
साथ है रहती, यह होती कभी न

धीरज है कभी बँधाती, साहस है कभी सिखाती।
यह कभी प्रेम उपजाती, कर दूर कुटिलता सारी ॥४॥
पढ़-पढ़ कर कथा पुरानी, पाते शिक्षा मन-मानी।
सुनकर पुस्तक की बानी, सब होते हैं व्रतधारी ॥५॥

अभ्यास

१—पुस्तकें पढ़ने से क्या-क्या लाभ होते हैं।
२—'जीवन की नौका' से क्या समझते हो?
३—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—
जड़ता, श्रम, कुटिलता, व्रतधारी।
४—चौथे और पाँचवें छन्दों के अर्थ समझाओ।

पाठ १८

पालतू जानवर

जिन जानवरों को मनुष्य अपना काम लेने के लिए पालते हैं, उनमें से गाय, भैंस और बैल का हाल सब जानते हैं। यहाँ घोड़ा, हाथी, कुत्ता, बकरी, भेड़, गधा और बन्दर की चर्चा संक्षेप से की जायगी।

घोड़ा बड़े काम का जानवर होता है। ऊँची-ऊँची पहाड़ी, कंकरीली भूमि और नालों-खोहों

सब जगह सवारी का काम देता है। जहाँ इक्का, गाड़ी, मोटर, बाइसिकिल किसी की गुज़र न हो वहाँ घोड़ा ही काम देता है। अच्छे घोड़े दिन भर में सौ-सौ कोस तक की दौड़ लगा सकते हैं। इसकी सवारी से शरीर सुडौल और फुर्तीला होता है। सब से बड़ा गुण इस में यह है कि यह सिखाया जाय तो डर कर भाग खड़ा नहीं होता। इसलिए लड़ाई के मैदान में जितना काम यह देता है, उतना और कोई जानवर नहीं दे सकता। इन्हीं सब गुणों के कारण सवारी के अनेक साधनों का प्रचार होते हुए भी इसकी उतनी ही आवश्यकता अब भी समझी जाती है, जितनी प्राचीन काल में थी, जब कि सवारी के इतने साधन नहीं थे। प्राचीन काल के प्रसिद्ध पुरुषों के घोड़ों ने भी उन को प्रसिद्ध करने में बड़े-बड़े काम किये हैं। महाराना प्रताप का 'चेतक' उस समय तक याद रहेगा, जिस समय तक संसार में इतिहास पढ़ने-पढ़ाने का प्रचार रहेगा।

घोड़ों की अनेक जातियाँ होती हैं। गाँवों में छोटे-मोटे काम के लिए और साधारण सवारी

के लिए जो घोड़े रक्खे जाते हैं, वे मामूली होते हैं। इनके रखने का खर्च कम पड़ता है और अधिक देख-भाल रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अच्छी जाति के घोड़े बहुत महँगे मिलते हैं, जिन को धनी और राजे महाराजे ही रख सकते हैं। फ़ौजी घोड़े भी अच्छी जाति के होते हैं और अच्छी तरह सिखाये जाते हैं। देशभेद से इन की जाति प्रसिद्ध होती है। नेपाली, टाँघन और काठियावाड़ी टट्टू बड़े मज़बूत होते हैं, पर क़द में छोटे होते हैं। अरबी और तुर्की घोड़े अपनी चाल और शान में अद्वितीय होते हैं। पर क़द में बड़े होते हैं। अरबी घोड़ों को ताज़ी कहते हैं। रंग विशेष पर भी इनके नाम रक्खे जाते हैं। जाति की विशेषता स्थिर रखने के लिए पालने में बड़ा ख़याल रखते हैं।

घोड़े बड़े समझदार होते हैं। अपने मालिक को अच्छी तरह पहचानते हैं और इन की इशारे से मालूम हो जाता है कि कब कैसे चलना चाहिए। मित्र और शत्रु का बड़ा अच्छा ज्ञान रखते हैं।

यूरोप और अमरीका में घोड़े हल भी खींचते हैं। घोड़े इक्के, गाड़ी खींचने के लिए भी पाले जाते हैं। यह चलते बहुत तेज़ हैं, पर बैलों की तरह बहुत देर तक काम नहीं कर सकते। इन को बहुत आराम करने की ज़रूरत पड़ती है। इन से रोज़-रोज़ कुछ काम लेना चाहिए। यदि बहुत दिन तक अस्तबल में बँधे रहें और छूटने न पावें तो बिगड़ जाते हैं।

ऊँट रेगिस्तानी जानवर है। इस की बनावट ऐसी होती है कि मरुभूमि में, जहाँ कोसों तक बालू ही बालू दिखाई पड़ती है, यह सहज ही चल फिर सकता है। कँकड़ीली और पथरीली भूमि पर इसको चलने में कठिनाई होती है। यह मनुष्य से ड्यौढ़ा-दुगना ऊँचा होता है। इस की गरदन लम्बी होती है, जिस से पेड़ों की पत्तियाँ आसानी से चर लेता है। नीम की पत्ती बड़े चाव से खाता है। बबूल की पत्ती भी अच्छी तरह चरता है। पानी इतना पीता है कि यदि एक अठवारे तक इस को पानी न मिले तो इसे ह नहीं होता। इस का रंग मटमैला भूरा होता है इस पर दो आदमी से अधिक एक माल

नहीं कर सकते। यह अधिकतर बोझा ढोने के लिए पाला जाता है। गाड़ियाँ भी खींचता है। अच्छी जाति के ऊँट डाक ले जाने के काम में लाये जाते थे। तेज़ चलने वाली या दौड़ने वाली ऊँटनियों को साँड़नी कहते हैं।

ऊँट

जितने जानवर पाले जाते हैं, उनमें हाथी सब से बड़ा होता है। इसका रंग भूरा या काला होता है। पाँव खम्भे के समान जान पड़ते हैं। कान सूप के समान बहुत बड़े होते हैं, जिन से यह बहुत दूर की आहट सुन सकते हैं। इस के दो दाँत मुँह से बाहर सींग की तरह निकले रहते हैं, जो देखने में बहुत भले जान पड़ते हैं। अफ्रीका के हाथी इन्हीं दाँतों के कारण मारे जाते हैं। ब्रह्मा, नैपाल और उड़ीसा के जंगलों में हाथी बहुतायत से पाये जाते हैं। वहाँ इन का शिकार

नहीं किया जाता, वरन् पाले जाते हैं और इनकी पूजा की जाती है। इनका भोजन ऊख, बरगद की पत्ती और अनाज है। हाथी के पालने में बड़ा खर्च पड़ता है, इसलिए बड़े-बड़े धनी और राजे महाराजे ही इसके खर्च को सँभाल सकते हैं। इस पर चार-पाँच आदमी से अधिक एक साथ सवारी नहीं कर सकते। आराम से बैठने के लिए इस पर चाँदी या गंगायमुनी* के हौदे रक्खे जाते हैं। इनकी ऊँचाई आदमी से दुगुनी होती है। इसलिए जलूस और मेलों में इन पर सवारी करनी बड़ी शोभा समझी जाती है। चाल इनकी मन्द और गंभीर होती है।

प्राचीन काल में सेना में रथ, घोड़े और पैदल के साथ हाथी भी रक्खे जाते थे, इसलिए सेना को चतुरङ्गिनी कहते थे। पर हाथी उतना काम नहीं देते जितना घोड़े। कभी-कभी तो इन के कारण बड़ा धोखा हो जाता था। कहते हैं कि जिस समय सिकन्दर बादशाह भारत पर चढ़

---

* प्रयाग में गंगा और यमुना दोनों नदियाँ मिल कर एक हो जाती हैं। इसलिए गंगा यमुनी का अर्थ 'दो चीज़ों से बना हुआ' है। यहाँ पर "सोना और चाँदी" से आशय है।

आया था, पंजाब के राजा पुरु ने सिकन्दर का सामना बड़ी वीरता के साथ किया था। यदि इसकी सेना के हाथी बिगड़ कर भाग न खड़े होते और अपनी ही सेना कुचल कर तितर बितर न होते तो सिकन्दर को यहाँ से हार कर लौटना पड़ता।

हाथी

हाथी बड़े बुद्धिमान् होते हैं। अपनी सूँड़ से, जो सिर से पैर तक पूँछ के समान लटकती रहती है, यह पानी पीते और सुई जैसी छोटी-छोटी चीज़ों को उठा सकते हैं। इसी से पेड़ की डालियाँ तोड़ डालते हैं और भोजन उठाकर मुँह में डालते हैं। शादी-ब्याह या अन्य जलसों की शोभा बढ़ाने के लिए इन की बड़ी माँग होती है।

कुत्ता अपनी स्वामिभक्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह रात को ज़रा-सी आहट पाकर भी जग

उठता है और अपरिचित आदमी पर शत्रु की तरह टूट पड़ता है। इसलिए लोग घर और खलिहान की रखवाली के लिए इसे पालते हैं।

कुत्ता

जो लोग ऐसा सोते हैं कि ज़रा-सी आहट पाकर जग उठते हैं उन के लिए कहा जाता है कि ये कुक्कुर नींद सोते हैं। ऊपर जितने जानवरों का बयान हुआ है, कोई मांसाहारी नहीं है; पर कुत्ता मांसाहारी भी है। इस की अनेक जातियाँ होती हैं। शिकारी कुत्ते बहुत तेज़ दौड़ते हैं और गिलहरी, खरगोश या हिरन इत्यादि को दौड़ते दौड़ते पकड़ डालते हैं। कुत्ते का बिल्ली से स्वाभाविक बैर है। गिलहरी और बिल्ली पेड़ या खपड़ैल पर चढ़ कर अपनी जान बचाते हैं। कुत्ते भी बड़े समझदार होते हैं और अपने

मालिक की भलाई जी-जान से करते हैं। सिखाने पर घर के कई काम कर सकते हैं।

भेड़ का बाल ऊन कहलाता है। ऊनी कपड़े बड़े पवित्र समझे जाते हैं। साधारण भेड़ से जो ऊन निकलता है, वह मोटा होता है, जिस से बिछाने के कम्बल बनाये जाते हैं। देहात के गरीब आदमी उसको ओढ़ते भी हैं। भेड़ के पालने वाले गड़रिये कहलाते हैं। कश्मीर की भेड़ों से जो ऊन निकलता है, वह बड़ा नरम और बारीक होता है, जिससे अच्छे-अच्छे शाल, दुशाले, लोई और धुस्से बनते हैं। कश्मीर के बने दुशाले देश-देशान्तरों में जाते थे और बड़े दाम पर बिकते थे। अब तो विदेशी माल के सामने कश्मीर का व्यापार भी मन्दा पड़ गया है, फिर भी कश्मीर के बहुत से आदमी इस से अपनी रोटी कमाते हैं।

भेड़ का दूध बहुत गाढ़ा होता है। इसके दूध में घी का अंश बहुत रहता है। गड़रिये दूध से दही जमाते और घी निकालते हैं, जिसे गाय-भैंस के घी में मिलाकर बेच देते हैं। इन की मेंगनी की खाद बहुत अच्छी होती है। किसान मेंगनी के लिए भेड़ के गल्ले को खेत में रखते हैं जिससे

इस से रोग शान्त हो जाता है। जो लोग गाय भैंस नहीं रख सकते, वे दूध के लिए बकरी पालते हैं। व्यापार के लिए भुंड की भुंड बकरियाँ पाली जाती हैं। भेड़ और बकरियों का चमड़ा बहुत से कामों में आता है। भेड़ और बकरी दोनों जङ्गली पत्ती और घास खाकर रहती हैं। कुछ जाति की बकरी के बाल बड़े मुलायम, चिकने और बारीक होते हैं, जिस से कपड़े बनाये जाते हैं। यह बात इस देश की बकरी में नहीं पायी जाती।

गधा बड़ा भोला जानवर होता है। इस में समझ बहुत कम होती है। इसी लिए मूर्ख आदमियों और लड़कों को लोग "गधा" कह कर पुकारते हैं। गधे की बनावट घोड़े से बहुत कुछ

गधा

मिलती-जुलती है। यह सवारी के काम में नहीं आता। धोबी इसे लादने के लिए पालते हैं।

लिए भेड़ की संख्या के अनुसार दाम भी चुका
हैं। यह प्रसिद्ध है कि गड़रिये के खेत भेड़ों के
कारण बहुत बलवान और उपजाऊ होते हैं।
भेड़ें बहुत सीधी होती हैं और जिधर एक झुकती
है, झुण्ड की झुण्ड उसी ओर चली जाती हैं।
उनका सिर ऊपर नहीं उठता। इसीलिए जब
लोग किसी आदमी के पीछे बिना सोचे-विचारे
झुण्ड के झुण्ड चलने लगते हैं, तब कहा जाता
है कि "भेड़िया धसान" है। नर भेड़ को
मेढ़ा कहते हैं। मेढ़ों की लड़ाई बड़ी भयंकर होती
है। लोहूलुहान हो जाते हैं।

कुत्ते की तरह एक जंगली जानवर और होता
, जो भेड़-बकरियों को मार कर खा जाता है।
टे छोटे बच्चों को भी कभी-कभी उठा ले जाता
और उनको पालता है। इस को भेड़हा या
ड़िया कहते हैं, इसलिए भेड़ और भेड़िये को
ही न समझना चाहिये।

बकरी भी भेड़ की तरह पाली जाती है।
दूध अच्छा समझा जाता है। आयुर्वेद
खा है कि क्षय रोगी को बकरी का दूध
चाहिए और इन्हीं के पास रहना चाहिए।

इस से रोग शान्त हो जाता है। जो लोग गाय भैंस नहीं रख सकते, वे दूध के लिए बकरी पालते हैं। व्यापार के लिए भेड़ की भेड़ बकरियाँ पाली जाती हैं। भेड़ और बकरियों का चमड़ा बहुत से कामों में आता है। भेड़ और बकरी दोनों जङ्गली पत्ती और घास खाकर रहती हैं। कुछ जाति की बकरी के बाल बड़े मुलायम, चिकने और बारीक होते हैं, जिस से कपड़े बनाये जाते हैं। यह बात इस देश की बकरी में नहीं पायी जाती।

गधा बड़ा भोला जानवर होता है। इस में समझ बहुत कम होती है। इसी लिए मूर्ख आदमियों और लड़कों को लोग "गधा" कह कर पुकारते हैं। गधे की बनावट घोड़े से बहुत कुछ

गधा

मिलती-जुलती है। यह सवारी के काम में नहीं आता। धोबी इसे लादने के लिए पालते हैं।

५—बकरी के दूध में क्या गुण है ?

६—खरगोश, हिरन और शेर जंगली जानवर हैं। इन पर एक लेख लिखो।

७—नीचे लिखे हुए शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करोः—
सुडौल, साधन, प्रचार, अद्वितीय, विशेषता, स्थिर, प्रतिकूल।

८—हमारे देश में सवारी के साधन कौन-कौन से हैं ?

९—पहले दोनों अनुच्छेदों में संज्ञा शब्दों को छाँटो, और प्रत्येक का भेद (जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक) भी बताओ।

पाठ १५

प्रह्लाद-प्रतिज्ञा*

पिता ! भगवान की लीला निराली।
यही विश्वोपवन का चित्र माली॥
जिसे भाये सुधा सम पय पिलाई।
कमल भाये सुमन सुन्दर खिलाई॥
यही मरुभूमि में सरिता बहाई।
हरी खेती यहीं पर लहलहा दे।

* [illegible]

गधी का दूध बच्चों को बड़ा लाभ पहुँचाता है।
गधे का रंग मटमैला भूरा होता है। कहते हैं कि
जब गरमी के महीने में जङ्गल की घास सूख
जाती है, तब और जानवर तो दुबले हो जाते
हैं, पर यह समझता है कि जङ्गल की सब घास
मैं ही खा गया हूँ। बस इसी प्रसन्नता से यह
मोटा हो जाता है। इस के प्रतिकूल वर्षा ऋतु में
जब घास ख़ूब लहलहाती है, तब यह सोचता
है कि कुल घास कैसे खा सकूँगा, बस इसी
सोच के कारण यह दुबला होता जाता है।

घोड़े और गधे के मेल से एक जाति खच्चर
होती है। खच्चर क़द में गधे से कुछ बड़ा
साधारण घोड़े की तरह होता है। यह बड़ा
बलवान होता है और भारी-भारी बोझ लादना
गाड़ियाँ खींचना है। खच्चर बहुधा फ़ौज में
सामान लादने के लिए अधिक रक्खा जाता है।

उसे चाहे अगर पल में उजाड़े।
यही ब्रह्मांड को जड़ से उखाड़े॥
न कोई पार उसका पा सका है।
जिसे देखा वही थाकर थका है॥
न बल से काम अब कुछ चल सकेगा।
न छल का दाम ही फिर फल सकेगा॥
न खल का दल मुझे यह दल सकेगा।
अचल विश्वास है क्या टल सकेगा॥
झुका है शीश असि ऊपर चलाओ।
ख़ुशी से अग्नि में मुझ को जलाओ॥
गजों के पैर से चाहे पिराओ।
गले में गाँस दे गिरि से गिराओ॥
डराना व्यर्थ है क्या मैं डरूँगा।
बुलालो मृत्यु का स्वागत करूँगा॥
न अपनी बात से हर्गिज़ टरूँगा।
जिऊँगा ध्यान तब तक मैं धरूँगा॥
भला मैं बेंत से क्या बहल जाऊँ।
भला क्या दण्ड से मैं दहल जाऊँ॥
नहीं है जेल की भी झेल भारी।
परीक्षा आज ही ले लो हमारी॥

उसे चाहे अगर पल में उजाड़े।
वही ब्रह्मांड को जड़ से उखाड़े॥
न कोई पार उसका पा सका है।
जिसे देखा वही गाकर थका है॥
न बल से काम अब कुछ चल सकेगा।
न छल का दाम ही फिर फल सकेगा॥
न खल का दल मुझे यह दल सकेगा।
अचल विश्वास है क्या टल सकेगा॥
झुका है शीश असि ऊपर चलाओ।
खुशी से अग्नि में मुझ को जलाओ॥
गजों के पैर से चाहे पिराओ।
गले में गाँस दे गिरि से गिराओ॥
डराना व्यर्थ है क्या मैं डरूँगा।
बुलालो मृत्यु का स्वागत करूँगा॥
न अपनी बात से हर्गिज़ टरूँगा।
जिऊँगा ध्यान तब तक मैं धरूँगा॥
भला मैं बैंत से क्या बहल जाऊँ।
भला क्या दण्ड से मैं दहल जाऊँ॥
नहीं है जेल की भी झेल भारी।
परीक्षा आज ही ले लो हमारी॥

वही आड़े समय में काम आवे।
वही मेरी सदा बिगड़ी बनावे॥
वही कर्तार सब संसार का है।
वही भर्तार सब संसार का है॥
वही सुख सार मुझ से दीन का है।
वही आधार मुझ से दीन का है॥
मुझे अखिलेश है वह प्राण प्यारा।
उसी पर मैं पिता सर्वस्व हारा॥
कहो सब यातना कैसे सहूँ मैं।
विमुख क्यों भक्ति से 'विभु' की रहूँ मैं॥

अभ्यास

१—प्रह्लाद कौन था ? इस ने क्या प्रतिज्ञा की थी ?

२—इस पाठ से तुम क्या शिक्षा ग्रहण करते हो ?

३—विश्वपावन, भर्तार, मौत, आनि, और अखिलेश के अर्थ बताओ।

शब्दों के प्रयोग करो—

पाठ १६

चीन देश के बालक

बंशी और रामकुमार में गहरी मित्रता
दोनों एकान्त में बैठ कर बहुधा आपस में
चीत किया करते हैं और उन की बातचीत
अक्सर भिन्न-भिन्न देशों के रहन-सहन पर
हुआ करती है। एक दिन बंशी ने कहा—रा
मार, आज कुछ चीन के विषय में सुनाओ।
के मकान किस ढंग के होते हैं?

रामकुमार—चीन में लोग अपने घर बहु
लकड़ी के बनाते हैं। वहाँ ऐसे घर बहुधा
मिलेंगे जिन में छत हो। सब एक ही मंजिल
होते हैं। कमरों के भीतर का हिस्सा मिट्टी
बनाया जाता है। उनमें दरी-गलीचा कुछ
नहीं बिछा रहता। मुश्किल से किसी कमरे
मेज़-कुरसी लगी हो तो लगी हो, नहीं इन
भी अभाव ही समझिये।

बंशी—तो क्या बच्चों को भी ज़मीन पर
सोना पड़ता है?

रामकुमार—नहीं, वे पालने पर सुलाये जाते हैं।

वंशी—बच्चों को किस प्रकार कपड़ों में ढाँके रहते हैं? यहाँ के बच्चे कैसे रहते हैं?

रामकुमार—चीनी लोग लाल रंग को शुभ समझते हैं। प्रत्येक शुभ कार्य में वे लाल रंग के वस्त्र पहनते हैं। अपने बच्चों का बिस्तरा भी लाल रंग के कपड़े का बनवाते हैं। मा अपने बच्चे की कलाई में लाल रंग का धागा बाँध देती है, जो ज्यों का त्यों पन्द्रह दिन तक बंधा रहता है। उन का विश्वास है कि लाल रंग का धागा बच्चों को सुरक्षित रखता है, उस के प्रभाव से वे भविष्य में मान-प्रतिष्ठा और बड़ाई पाते हैं। उन के गले में भी चाँदी के छोटे-छोटे खिलौने लाल धागे से बाँध कर पहनाये जाते हैं।

वंशी—क्या उन का मुण्डन भी किया जाता है?

रामकुमार—हाँ, जन्म के एक महीना बाद उन का मुण्डन बड़े उत्सव के साथ किया जाता है। माता बच्चे को लाल रंग का ढीलाढाला-सा

पहनाती है। नाई लाल कपड़े पहन कर मुं
करने आता है। सिर के कुल बाल बना लि
जाते हैं, सिर्फ़ पीछे एक चोटी छोड़ दी जात
है। किन्तु बालिका के सिर के सामने भी बाल
रख दिये जाते हैं।

वंशी—चीनी लोग चोटी क्यों रखते हैं?

रामकुमार—कहा जाता है कि बहुत दिन
चीन पर तातारवालों* ने चढ़ाई कर दी थी।
युद्ध में तातारियों को जीत हुई। यह दिखाने
ए कि चीन वासी तातारियों के दास हैं
गों ने चीन वालों को चोटी रखने के लिए
किया। परन्तु अब चोटी रखने की प्रथा
गई है।

—अच्छा; मुण्डन के बाद क्या होता है?

मार-—मुण्डन के बाद बालक को बूढ़ी
ले जाते हैं। इसी दिन बूढ़ी माँ पहले-
ालक का मुँह देखती है। यद्यपि —
ी घर में रहेगी, तो भी एक मर्द

बीते बिना वह बच्चे को देख नहीं पाती। मुँह दिखाई के समय वह कुछ शुभ वस्तु भी देती है। इस के बाद बड़ी धूम-धाम से बिरादरी वालों को निमन्त्रण दिया जाता है। पर जितने अतिथि आते हैं, वे सब कुछ न कुछ भेंट अवश्य लाते हैं।

निमन्त्रण के दिन बालक का नामकरण होता है। इस नाम को छोटा नाम कहते हैं। दूसरा नाम तब रक्खा जाता है, जब बालक पाठशाला जाने लगता है और तीसरा जब वह अच्छी तरह युवा हो जाता है।

बंशी—क्या वहाँ बच्चों की जन्म-तिथि का भी उत्सव होता है?

रामकुमार—हाँ, परन्तु विचित्र ढंग से। जिस दिन नया वर्ष आरम्भ होता है, उस दिन सब बच्चों का जन्म-दिन मनाया जाता है। हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता। उस दिन बूढ़ी मा फिर भेंट देती है। बहुधा वह एक जोड़ा लाल जूता इस आशा से देती है कि बच्चा शीघ्र चलने-फिरने लगे। इस के बाद खाना-पीना होता है। सब बच्चों को लाल रंग के नये कपड़े और जूते पहना कर उन्हें सब के बीच में बैठा देते हैं।

शुभ गिना जाता है। बालक अक्सर काली या नीली टोपी पहनते हैं। जिस दिन लड़के पहले पहल पाठशाला जाते हैं, उस दिन वे गुरु के लिए भेंट ले जाते हैं। पाठशाला में पहुँचते ही वे गुरु को विनय के साथ प्रणाम करते हैं और जमीन से सिर टेकते हैं, फिर स्टूल पर बैठ जाते हैं। तुम जानते हो कि चीन में बहुधा क़लम से नहीं, किन्तु ब्रुश से लिखते हैं। वे अपना सबक़ बड़े ज़ोर से याद करते हैं। पाठ याद कर लेने पर वे गुरु की ओर पीठ कर के अपना सबक़ सुनाते हैं। वहाँ हर एक शब्द भिन्न-भिन्न अक्षर जोड़ कर नहीं लिखा जाता, किन्तु हर एक शब्द के लिए अलग-अलग चिह्न बना लिए गये हैं। उदाहरण के लिए हम गाय, घोड़े आदि की तस्वीर को देखते ही कह देते हैं कि यह घोड़ा है, या गाय है। उसी तरह एक ख़ास तरह के चिह्न को देख कर एक चीनी बता देगा कि यह अमुक शब्द है, इस से हर एक शब्द के हिज्जे करने की कठिनाई से चीनी बालक बच जाते हैं, परन्तु उन्हें हर एक शब्द के हर एक चिह्न को याद करना पड़ता है।

अंगरेज़ों के रहन-सहन के विषय में जो कुछ जानते हो बतलाओ।

पहले अनुच्छेद में कौन-कौन से शब्द अव्यय हैं ?

पाठ १७

कार्त्ती गान

सारे झमेले झंझट वह यों निबेड़ता है,
रह-रह घड़ी-घड़ी पर यह तान छेड़ता है
'धीरज न छोड़ देना कुसमय न यह रहेगा,
होगा प्रकाश घर-घर तू फिर सुपथ लहेगा।'

अभ्यास

—इस पाठ में काली रात के विषय में जो कुछ कहा है उसे अपनी सरल भाषा में लिखो।

—नीचे लिखे शब्दों के अर्थ समझाओ—
तमतोम, विभावरी, उलूक, द्विरद और शतकोटि।

—निशाचर = निशा + चर, अर्थात रात को चलने वाला। इसी प्रकार थलचर, नभचर, और जलचर शब्द हैं। परन्तु यहाँ निशाचर का विशेष अर्थ है राक्षस।

—इस पंक्ति को बहुत स्पष्ट रूप से समझाओः—
तम धैर्य का हृदय के घन से उखाड़ते हैं।

—इस पाठ से क्या शिक्षा मिलती है?

—एक छोटा सा लेख चाँदनी रात पर लिखो।

—इस पाठ में आई हुई भाववाचक संज्ञाएँ छाँटो।

पाठ १८

स्वामिभक्ति

अपने स्वामी के हित में सदैव तत्पर रहने को 'स्वामिभक्ति' कहते हैं। शायद तुमने स्वामिभक्ति की दो एक कहानियाँ सुनी होंगी। पर आज हम तुमको एक ऐसे वीर पुरुष का चरित सुनाते हैं जिसने अपने स्वामी के हित-साधन में अपने प्राणों तक की बलि दे दी। ऐसे वीर हितचिन्तक संसार में कम होते हैं और इस कारण वे विशेष आदरणीय हैं।

ईसा की बारहवीं शताब्दी में भारतवर्ष में हिन्दुओं का साम्राज्य था। महाराज पृथ्वीराज चौहान उन दिनों दिल्ली के आसन पर सुशोभित थे। इनके दरबार में बड़े-बड़े वीर सामन्त थे। इनमें एक वीर संयमराय भी थे। महाराज पृथ्वीराज ने अपने जीवन-काल में अनेक युद्ध किये और कई [illegible] को [illegible]

[illegible] राठौर से

[illegible]

कि परमाल ने पृथ्वीराज के कुछ घायल सिपाहियों को जो राह भूल कर उसके राज्य में पहुँच गये थे मरवा डाला। महाराज पृथ्वीराज को परमाल की यह करतूति असह्य हुई। उन्होंने तुरन्त महोबे पर चढ़ाई करदी। दोनों दलों में ख़ूब युद्ध हुआ।

इस युद्ध में एक बार पृथ्वीराज लड़ते-लड़ते घायल हो कर गिर पड़े और मूर्छित हो गए। जहाँ पर महाराज मूर्छित पड़े थे, वहीं उनका वीर सामन्त सञ्जमराय भी घायल हो कर गिर पड़ा था। संजमराय केवल घायल हुआ था मूर्छित नहीं, पर तो भी इतना शक्तिहीन हो गया था कि उठ नहीं सकता था। पृथ्वीराज को मरा समझ कर एक गीध उनके पास आ उनकी आँखे निकालने लगा। स्वामिभक्त संजमराय से यह न देखा गया। उसमें इतनी शक्ति न थी कि उठ कर

इतने में पृथ्वीराज को ढूँढ़ते हुए उनके अन्य सामन्त लोग डोली लिये वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने गीध को उड़ाया। संजमराय की स्वामिभक्ति देख सब की आँखों में आँसू आ गये। जब पृथ्वीराज की मूर्छा भङ्ग हुई और उनको संजमराय का वृत्तान्त ज्ञात हुआ तो वे अपने स्वामिभक्त सामन्त से लिपट कर रोने लगे।

संजमराय माँस कट जाने से बहुत क्षीण-बल हो चुका था। थोड़ी ही देर में वह इस असार-संसार को सदा के लिए छोड़ स्वर्ग सिधारा।

संजमराय तुम धन्य हो! यद्यपि इस समय संसार में तुम नहीं हो पर तुम्हारी विमल कीर्ति सदा अमर रहेगी। तुम्हारा आदर्श, स्वार्थ-त्याग इतिहास के पृष्ठों पर सदैव स्वर्णाक्षरों में अङ्कित रहेगा जिसे पढ़ कर भारतवासी तुम्हें याद करेंगे और तुम्हारी स्मृति में आँसू बहायेंगे।

अभ्यास

१—स्वामिभक्ति से क्या समझते हो?

२—संजमराय ने किस प्रकार अपने स्वामी पृथ्वीराज की सेवा की?

३—संजमराय के चरित्र से तुम क्या शिक्षा लेते हो?

४—अपने को पृथ्वीराज मान कर ऊपर की घटना का वर्णन सरल भाषा में करो।

५—नीचे लिखे शब्दों और पदों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—

चरित, हित-साधन, बलि देना, आदरणीय, करतूति, असह्य, मूर्छा, आदर्श, स्वार्थत्याग, स्वर्णाक्षरों में अङ्कित, स्मृति।

६—स्वामिभक्ति की कोई और कहानी बताओ जो तुमने ... हो। (कुत्ता और घोड़ा जैसे पशु भी स्वामिभक्ति के ... प्रसिद्ध होते हैं।)

...—नीचे लिखे शब्दों की ओर ध्यान दो :—

संज्ञा	विशेषण
भक्ति	भक्त
प्राप्ति	प्राप्त
सिद्धि	सिद्ध
स्थिति	स्थित

अन्य शब्द बताओ।

पाठ १९

ह्वेल

...वों में सब से बड़े क़द की ह्वेल मछली ... यह लंबाई में ७०-८० फुट तक होती ... अत्यन्त बृहदाकार होने के कारण ही ...यों में कभी-कभी इस पर द्वीप के

बड़े ऊँचे फ़ौवारे आप से आप भागे चले जाते हैं। उस की चाल के विषय में कहा गया है कि तेज़ से तेज़ डाकगाड़ी भी उसकी बराबरी नहीं कर सकती। उसमें शक्ति इतनी है कि वह अपनी दुम से बड़े-बड़े जहाज़ों को उलट कर डुबो सकती है। जल के अंदर साँस न ले सकने के सिवा इस में एक और विशेषता है। जिस के कारण इसे जलचर, भूचर दोनों कह सकते हैं; वह यह कि यह अपने बच्चों को गाय, भैंस की तरह थनों से दूध पिलाती है।

यह अधिकतर शीतप्रधान सागरों में ही रहा करती है, पर कभी-कभी समुद्र की किसी ठंडी धारा में पड़ कर धोखे से या और किसी कारण से गर्म देशों के आस-पास वाले सागरों में भी आ निकलती है। भारत-महासागर दक्षिण में दक्षिणी ध्रुव प्रान्तीय सागर से मिला हुआ है। अतएव कभी कभी भारत महासागर में भी यह देखी जाती है। लंका की राजधानी कोलंबो इसी महासागर के तट पर है। २६ मार्च सन १६१३ ई० में वहाँ एक बृहदाकार ह्वेल दिखलाई पड़ी थी। इसके पहले सन १८८२ ई० में भी एक ह्वेल

वहाँ आ निकली थी। सन् १९१३ ई० की २८
मार्च को कोलंबो के बंदर में एकाएक शोर
कि बंदर के अन्दर ह्वेल मछली घुस आई है।
अफ़वाह फैलते ही कई छोटे-बड़े स्टीमर औ
नावें इधर-उधर दौड़ पड़ीं। ह्वेल भला कब छिपी
रह सकती थी? बंदर के अन्दर उसके प्रवेश
करते ही प्रायः १० मिनट में सब को उसका
आना मालूम हो गया। फिर क्या था? सरका
स्टीमर और तमाशाइयों की नावें जिधर-तिधर
उसकी ओर दौड़ीं और उसे बड़े मोटे-मोटे रस्सों
से बाँधने का प्रयत्न करने लगीं, परन्तु पास
चने पर मालूम हुआ कि जिन मल्लाहों ने उसे
से पहले देख कर ख़बर दी थी, उन्होंने उसे मूँ
और सन के रस्सों से जकड़ रखा है।

ह्वेल बड़ी चुलबुली होती है। अपने नथनों
से दो फ़ौवारें छोड़ती बड़े वेग से वह सदा इधर-
उधर दौड़ती रहती है। वह जिधर से हो कर
निकलती है, उधर वह जल में बड़ी-बड़ी लहरें
पैदा कर देती है। परन्तु कोलंबो बंदर में घुसी
हुई ह्वेल बहुत सुस्त थी। वह धीरे-धीरे चलती
और कभी स्थिर तैरती रहती थी। इस से अन-

मान होता था कि या तो वह घायल थी या बीमार, इसीलिए मल्लाह उसे बात की बात में बाँध सके। इतने में सरकारी और अन्य स्टीमर और भी मोटे रस्से लेकर आ पहुँचे देखा कि ह्वेल कुछ हिलती-डुलती नहीं। उसकी लम्बाई कुछ लोग ५० फुट और कुछ इस से भी अधिक बताते थे। ह्वेल उस समय जहाज़ियों के मेलिंग स्टेज* के सामने थी। स्टीमरों और नावों ने चारों ओर से उसे घेर रक्खा था। जल पुलिस के इन्सपेक्टर मि० आष्टन ने एक बन्दूक़ से उसको लक्ष्य कर दनादन पाँच गोलियाँ मारीं; किन्तु इन गोलियों का उस के शरीर पर कुछ भी असर न हुआ। तो भी बन्दूक की दनादन आवाज़ से वह कुछ डर गई। जहाँ थी वहाँ से वह हट कर यात्रियों के घाट के सामने पहुँची। वहाँ पहुँचने पर उसे बन्दर के बाहर खुला हुआ समुद्र देख पड़ा। अब वह घाट पर भी न ठहरी और बड़े वेग से सीधी समुद्र की ओर चली। अब तो पीछा करने वालों में "लेना, जाने न देना" का शोर मचा। सब स्टीमर बड़ी तेज़ी से उस को

---

* [illegible]

आगे फेरने के लिए दौड़े, जिसका फल यह
कि बन्दर के मुहाने तक पहुँच कर भी म
बाहर न निकल सकी और बन्दर के दा
किनारे की ओर मुड़ी। फिर उसने बँगले की ओ
का मार्ग पकड़ा।

बँगलों के सामने जा कर वह ठहर
स्टीमरों ने उसे फिर वहाँ आ घेरा और आठ
रस्सों से बाँध कर मि० आष्टन ने नौ गोलि
दागीं। उस समय जल में जहाँ-तहाँ लोहू अवश्य
देख पड़ा पर मछली पर गोलियों का कुछ असर
हुआ नहीं जान पड़ता था। उस ने केवल ज़रा
सा बल खाया। बस, इतने ही से आठों मो
रस्से तड़ातड़ टूट गये मानों वे कच्चे धागे के तार
हों। फिर वह वहाँ से किंग्स गोदी* की ओर
चली। राह में एक बड़ी नाव सामने पड़ गई।
ह्वेल ने उसे पलट दिया। उस में एक कुली बैठा
था। वह डूबते-डूबते बचा। किंग्स गोदी में
कुछ देर ठहर कर मछली फिर पायो घाट को
लौटी और वहाँ प्रायः पाँच घंटे तक ठहरी रही।

* पानी से घिरा हुआ स्थान जहाँ जहाज [illegible]
या रक्षा के लिए खड़े होते हैं।

तब तक घाट पर हज़ारों दर्शक इकट्ठे हो गये। सब लोगों ने बड़े चाव के साथ उस के दर्शन किये। वहीं मि० आष्ट्रन ने फिर उसके चार गोलियाँ मारीं। पर सब बेकार हुईं। इसका फल यह हुआ कि ह्वेल वहाँ से हट कर फिर दूसरी जगह जा ठहरी। वहीं उस का फ़ोटो लिया गया।

(१४)

उस काल प्रेम धारा जग में उमँग बहेगी।
घर-घर लहर उठेगा आनन्द का नगारा॥

अभ्यास

१—इस कविता में किस विषय का वर्णन है?
२—भारत देश पर कोई और कविता जो तुम को याद हो सुनाओ।
३—तीसरे, छठे, ग्यारहवें और चौदहवें छन्दों का अर्थ समझाओ।
४—नीचे लिखे मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो —
(किसी का) सितारा चमकना, जी से उतार देना, आँख का तारा होना।

पाठ २१

परीक्षा

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो उन्हें परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से उन्होंने विनय की कि दीनबन्धु! दास ने श्रीमान् की सेवा चालीस वर्ष तक की, अब कुछ दिन परमात्मा की भी सेवा करने की आज्ञा चाहता है। दूसरे अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राज-काज सँभालने की

(७)

उन में कमाल अपना है जोन ही दि
रँग एक हो न रखता चाहे ह

(८)

तो क्या हुआ अगर हैं प्याले तरह-त
जब एक दूध उन में है भर रह

(९)

ऊँची निगाह तेरी लेगी मिला सभ
तेरा विचार देगा कर दूर भे

(१०)

हलचल, चहल-पहल, औ, अनबन अमन
औ, फूल जायगा बन जलता हुअ

(११)

जो चैन-चाँदनी में होंगे महल चम
सुख-चाँद झोंपड़ों में तो जायगा

(१२)

कर हेल-मेल हिल-मिल सब ही रहें-स
हो जायगा बहुत ही ऊँचा मिला

(१३)

सब जाति को रँगेगी तेरी मिलाप-रँ

शक्ति नहीं रह गई, कहीं भूल-चूक हो जाय तो बुढ़ापे में दाग लगे, सारी ज़िन्दगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाय।

राजा साहब अपने अनुभव-शील, नीति-कुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। उन्होंने बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब ने न मानी तो हार कर उसकी प्रार्थना स्वीकार करली। पर शर्त यह लगादी कि रियासत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकाला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें, वे वर्तमान दीवान सरदार सुजान सिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट* हों, मगर उन्हें हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है। मन्दाग्नि के मरीज़ों को यहाँ तक कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। एक महीने तक उम्मेदवारों के रहन-सहन, आचार विचार की देख-भाल की जायगी, विद्या का कम, परन्तु कर्त्तव्य का अधिक विचार किया जायगा।

* जो किसी विद्यालय की किसी ऊँची परीक्षा को पास करते हों।

लोग अपने अपने कमरों में बैठे हुए
मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिन
थे। हर एक मनुष्य अपने जीवन को अप
के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की
करता था। मिस्टर, "अ" नौ बजे दि
सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टह
उषा का दर्शन करते थे। मिस्टर "ब" को
पीने की लत थी पर आजकल बहुत रा
किवाड़ बन्द करके अँधेरे में सिगरेट पीते
मिस्टर "द" "स" और "ज" से उनके घ
नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन
कल "आप" और "जनाब" के बग़ैर नौक
बात-चीत नहीं करते थे। महाशय "क" नास्ति
हक्सले [2] के उपासक, मगर आजकल उनकी
निष्ठा देख कर मन्दिर के पुजारी को पदच्यु
जाने की शंका लगी रहती थी। मिस्टर "ल"
किताबों से घृणा थी, परन्तु आजकल वे बड़े
धर्म ग्रंथ खोले पढ़ने में डूबे रहते हैं। जिससे

1—महाशय। मिस्टर अँगरेज़ी का शब्द है।
2—एक विद्वान था जो नास्तिक था, अर्थात ईश्वर को

मानुस शतरंज और ताश जैसे गम्भीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे। खेल बड़े उत्साह से जारी था। धावे से लोग जब गेंद लेकर तेजी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन दूसरी ओर के खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे मानो लोहे की दीवार हैं।

सन्ध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने में तर हो गये। खून की गर्मी आँख और चहरे से झलक रही थी। हाँपते-हाँपते बेदम हो गये, लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान में ज़रा दूर हट कर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था। पथिकों को नाले में चल कर आना पड़ता था। खेल अभी बन्द ही हुआ था और खिलाड़ी लोग बैठे दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिये उस नाले में आया। कुछ तो नाले में कीचड़ थी और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहिये को हाथों से ढकेलता;

के उधार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं
रना पड़ता।

युवक ने हँस कर कहा, अब मुझे कुछ
नाम देते हो? किसान ने गम्भीर भाव से कहा,
ारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।

युवक ने किसान की तरफ़ ग़ौर से देखा।
सके मन में एक सन्देह हुआ, क्या यह सुजान-
सिंह तो नहीं है? आवाज़ मिलती है। चेहरा-
ुहरा भी वही है। किसान ने भी उसकी ओर
ीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के सन्देह
ो भाँप गया। मुस्करा कर बोला, गहरे पानी में
ैठने से मोती मिलता है। निदान महीना पूरा
ुआ। चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मेदवार
ातःकाल से ही अपनी क़िस्मत का फ़ैसला सुनने
के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया।
प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग
आते थे। नहीं मालूम आज किस के नसीब
जागेंगे, न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपा-दृष्टि
होगी। संध्या समय राजा साहब का दरबार
सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य लोग,

राजा के कर्मचारी और दर्बारी और दीवानी के उम्मेदवार सब रंग-बिरंग की सजधज बनाये दरबार में आ विराजे। उम्मेदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े हो कर कहा—मेरे दीवानी के उम्मेदवार महाशयो ! मैंने आप लोगों को जो कुछ कष्ट दिया हो, उसके लिए क्षमा कीजिये। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ ही साथ आत्मबल भी। हृदय वही है जो उदार हो, आत्मबल वही है जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।

५—अर्थ बताओ —

अनुभवशील, नीतिकुशल, मन्दाग्नि, महानुभाव, उपा, उपासक, धर्मनिष्ठा, पदच्युत, सदाचार, निराश, सहानुभूति, मत्सर, उदासीनता, वात्सल्य, उत्सुक, आत्मबल, संकल्प।

६—नीचे लिखे वाक्यों के अर्थ समझाओ—

(क) लेकिन मनुष्यों का यह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

(ख) गहरे पानी में बैठने से मोती मिलता है।

७—ऊपर की कहानी छोटी-सी है। ऐसी छोटी कहानी को "गल्प" कहते हैं। देखो इस गल्प की भाषा कितनी सुन्दर है। एक बार शुरू करके छोड़ने को जी नहीं चाहता। तुम भी ऐसी भाषा लिखने की कोशिश करो।

८—पहले तीन अनुच्छेदों में जितने विशेषण शब्द आये हैं उन्हें छाँटो, और प्रत्येक के भेद भी बताओ।

पाठ २२

परोपकार

(१)

जो पराये काम आता धन्य है जग में वही।
द्रव्य ही को जोड़कर कोई सुयश पाता नहीं॥
पास जिसके [illegible] अनन्त और,
क्या कभी व[illegible]

५—अर्थ बताओ—

अनुभवशील, नीतिकुशल, मन्दाग्नि, महानुभाव, उपा, उपासक, धर्मनिष्ठा, पदच्युत, सदाचार, निराश, सहानुभूति, मत्सर, उदासीनता, वात्सल्य, उत्सुक, आत्मबल, संकल्प।

६—नीचे लिखे वाक्यों के अर्थ समझाओ—

(क) लेकिन मनुष्यों का यह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।
(ख) गहरे पानी में बैठने से मोती मिलता है।

७—ऊपर की कहानी छोटी-सी है। ऐसी छोटी कहानी को "गल्प" कहते हैं। देखो इस गल्प की भाषा कितनी सुन्दर है। एक बार शुरू करके छोड़ने को जी नहीं चाहता। तुम भी ऐसी भाषा लिखने की कोशिश करो।

८—पहले तीन अनुच्छेदों में जितने विशेषण शब्द आये हैं उन्हें छाँटो, और प्रत्येक के भेद भी बताओ।

पाठ २३

बादशाह शाहजहाँ

बालको ! तुम में से भला ऐसा कौन होगा कि जिस ने ताजमहल नामक सुन्दर इमारत का नाम न सुना होगा ? परन्तु, क्या तुम इसके बनवाने वाले के विषय में भी कुछ जानते हो ! यह बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था । इस पाठ में तुम को इसी बादशाह का कुछ वर्णन बतलाया जायगा ।

वह ३ गज़ लम्बा, २॥ गज़ चौड़ा और ५ फुट ऊँचा था। चढ़ने के लिए तीन सुन्दर सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। खम्भों के सिरों पर सुन्दर मोर बने हुए थे। चारों ओर सिंहासन में हीरे व जवाहिरात जड़े हुए थे। इनमें एक हीरा १४ लाख रुपये का बतलाया जाता है। इस सिंहासन को 'तख़्त-ताऊस' (अथवा, मयूर-सिंहासन) कहते थे। इसके बनने में ७ वर्ष लगे, और कुल १० करोड़ रुपया व्यय हुआ। बाद में इसको नादिरशाह फ़ारस ले गया, जहाँ वह आज तक मौजूद है।

ताजमहल-आगरा
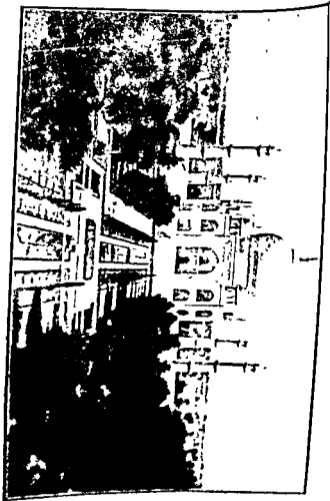
देखते ही सब बात ज्ञान हो गई। डंडा किनारे रख दिया, कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला, मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ ?

किसान ने देखा कि एक गठे हुए बदन का लम्बा आदमी सामने खड़ा है। डरकर बोला, हुजूर मैं आप से कैसे कहूँ ?

युवक ने कहा मालूम होता है तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैल को साधो, मैं पहियों को ढकेलता हूँ। अभी गाड़ी ऊपर जाती है।

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहियों को ज़ोर लगा कर खसकाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा थी। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया। लेकिन उसने हिम्मत न हारी।

उसने फिर ज़ोर किया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा बैलों को सहारा मिला, उनकी भी हिम्मत बँध गई। उन्होंने कंधे झुका कर एक बार ज़ोर किया, बस गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा ... बोला, महाराज! ... आज-

राजा के कर्मचारी और दर्शंगी और दीवानी के उम्मेदवार सब रंग-बिरंग की सजधज बनाये दरबार में आ विराजे। उम्मेदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े हो कर कहा—मेरे दीवानी के उम्मेदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कुछ कष्ट दिया हो, उसके लिए क्षमा कीजिये। मुझे इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ ही साथ आत्मबल भी। हृदय वही है जो उदार हो, आत्मबल वही है जो आपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुण वाले संसार में कम हैं और जो हैं, वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं। उन तक हमारी पहुँच ही नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।

५—अर्थ बताओ—

अनुभवशील, नीतिकुशल, मन्दाग्नि, महानुभाव, उषा, उपासक, धर्मनिष्ठा, पदच्युत, सदाचार, निराश, सहानुभूति, सरसर, उदासीनता, वात्सल्य, उत्सुक, आत्मबल, संकल्प।

६—नीचे लिखे वाक्यों के अर्थ समझाओ—

(क) लेकिन मनुष्यों का यह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

(ख) गहरे पानी में बैठने से मोती मिलता है।

७—ऊपर की कहानी छोटी-सी है। ऐसी छोटी कहानी को "गल्प" कहते हैं। देखो इस गल्प की भाषा कितनी सुन्दर है। एक बार शुरू करके छोड़ने को जी नहीं चाहता। तुम भी ऐसी भाषा लिखने की कोशिश करो।

८—पहले तीन अनुच्छेदों में जितने विशेषण शब्द आये हैं उन्हें छाँटो, और प्रत्येक के भेद भी बताओ।

पाठ २२

परोपकार

(१)

जो पराये काम आता धन्य है जग में वही।
द्रव्य ही को जोड़कर कोई सुयश पाता नहीं॥
पास जिसके रत्न-राशि अनन्त और अशेष है।
क्या कभी वह सुरधुनी के सम हुआ सलिलेश है॥

पाठ २३

बादशाह शाहजहाँ

बालको ! तुम में से भला ऐसा कौन होगा कि जिस ने ताजमहल नामक सुन्दर इमारत का नाम न सुना होगा ? परन्तु, क्या तुम इसके बनवाने वाले के विषय में भी कुछ जानते हो? यह बादशाह शाहजहाँ ने बनवाया था। इस पाठ में तुम को इसी बादशाह का कुछ वर्णन बतलाया जायगा।

शाहजहाँ का असली नाम ख़ुर्रम था। यह अकबर का पोता था। इस की मा राजपूतनी थी और इसका पिता जहाँगीर आधा राजपूत था। शाहजहाँ जहाँगीर की मृत्यु के पीछे सन् १६२८ ई० में सिंहासन पर बैठा, और उस ने ३० वर्ष राज्य किया। गद्दी पर बैठते ही उस ने अपने सब संबंधियों और उन की सन्तान का वध करवा डाला, जिस से कोई भी गद्दी का दावीदार न बचे। यह अवश्य बड़ी निर्दयता का काम था, परन्तु आगे चल कर शाहजहाँ ने अपने काल में अत्याचार का कोई काम नहीं किया। केवल

यह ३ गज लम्बा, २॥ गज चौड़ा और ४ फुट ऊँचा था। चढ़ने के लिए तीन सुन्दर सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। खम्भों के सिरों पर सुन्दर मोर बने हुए थे। चारों ओर सिंहासन में हीरे व जवाहिरात जड़े हुए थे। इनमें एक हीरा १४ लाख रुपये का बत-लाया जाता है। इस सिंहासन को 'तख़्त-ताऊस' (अथवा, मयूर-सिंहासन) कहते थे। इसके बनने में ७ वर्ष लगे, और कुल १० करोड़ रुपया व्यय हुआ। बाद में इसको नादिरशाह फ़ारस ले गया, जहाँ वह आज तक मौजूद है।

सम्राट् ने अनेक सुन्दर इमारतें भी बनवाईं, जिनमें आगरे का ताजमहल (ताजबीबी का रौज़ा) सबसे प्रसिद्ध है। यह संसार में सबसे सुन्दर भवन है। ताजमहल के अतिरिक्त आगरे के क़िले में मोती मसजिद भी शाहजहाँ ने बन-वाई। दीवान-ख़ास पर फ़ारसी में एक प्रसिद्ध शेर लिखा हुआ है, जिसका आशय यह है कि "यदि भूतल पर कहीं स्वर्ग है तो यहीं है, यहीं है यहीं है।" शाहजहाँनाबाद या नई दिल्ली भी शाहजहाँ ने ही बसाई थी।

की ओर बढ़ी। उधर से दारा शाही सेना लेकर चल पड़ा। दोनों में आगरे के निकट सामूगढ़ के मैदान पर मुठभेड़ हुई। एक बार औरंगज़ेब का हाथी मैदान छोड़ कर भागने ही वाला था कि उसने आज्ञा दे दी कि हाथी के पैर ज़ंजीरों से जकड़ दिये जाएँ ताकि वह भाग न सके। घमासान युद्ध के बीच में ही नमाज़ का समय आ जाने पर औरंगज़ेब ने हाथी से उतर कर नमाज़ पढ़ी। इन दोनों बातों का उसके सैनिकों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। वे जी तोड़ कर लड़े। उधर दारा हौदे का बन्द टूट जाने से हाथी से गिर पड़ा। उसकी सेना में भगदड़ मच गई। मैदान औरंगज़ेब ने मार लिया। उसने आगरा और देहली पर शीघ्र ही अधिकार कर लिया और पिता तथा अन्य सारे सम्बन्धी क़ैद कर लिये, जिन में से बहुत से पीछे मार डाले गये। अब बच रहा मुराद। सो औरंगज़ेब ने उसे एक दिन खूब शराब पिलायी, और जब वह बेहोश हो गया तो उसे क़ैद कर लिया। होश आने पर अपने को बन्दी देख कर मुराद के होश उड़ गये। उस ने भाई से पूछा कि, 'यह क्या माजरा है?"

उत्तर मिला, "एक शराबी मनुष्य राज्य करने के सर्वथा अयोग्य है। मैं राज्य करूँगा, तुम नहीं।" बस अब क्या था? औरंगज़ेब निर्द्वन्द हो कर गद्दी पर बैठ गया।

बन्दीगृह में शाहजहाँ ७ वर्ष और जीवित रहा। यह समय भी उसका दुःख में कटा। उस की प्यारी पुत्री जहाँनारा भी उसके साथ रहने लगी। वह उसकी सेवा में रात-दिन लगी रहती थी। ऐसा कहा जाता है कि औरङ्गज़ेब ने शाहजहाँ से कहा कि 'तुम खाने को एक अन्न माँग लो और समय काटने के लिए एक पेशा स्वीकार कर लो।' शाहजहाँ ने खाने के लिए चना माँगा और लड़कों के पढ़ाने का पेशा स्वीकार किया। पिछली बात पर औरङ्गज़ेब ने कहा कि मालूम होता है कि तुम्हारे दिमाग़ से अभी बादशाहत की बू नहीं गई है।" एक बार शाहजहाँ ने दुःखी हो कर औरङ्गज़ेब को एक पत्र लिखा था। जिस का आशय यह था कि, "हिन्दू प्रशंसा के योग्य हैं जो अपने मुर्दों को भी जल देते हैं। तुम कैसे मुसलमान हो जो अपने जीवित बूढ़े पिता को भी पानी के लिए तरसाते हो?"

शाहजहाँ सन १६६६ ई० में परलोक सिधारा। उस का काल मुग़ल-साम्राज्य का सुनहरी समय था। चारों ओर राज्य में शान्ति थी। देश में सम्पत्ति बहुत थी। सम्राट् के वैभव की चर्चा दूर-दूर देशों में की जाती थी। उसका दरबार ठाट-बाट में संसार में अपनी बराबरी नहीं रखता था। प्रजा भी सुखी और धनी थी।

अभ्यास

१—शाहजहाँ कौन था?

२—उस को किन बातों का ख़ास शौक़ था?

३—मुमताजमहल के विषय में क्या जानते हो?

४—राजकुमारों में जो घरेलू युद्ध हुआ उसे अपनी भाषा में लिखो।

५—नीचे लिखे शब्दों और पदों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो.—

सम्बन्धी, विद्रोही, अनुकरण, रण-कुशल, परिचय, अपार, षड्यन्त्र, उत्तराधिकारी, विलासी, निर्द्वन्द्व।

६—नीचे लिखे मुहाविरों के अर्थ बताओ:—

दमपट्टी में आना, मैदान मारना, परलोक सिधारना।

७—किसी महापुरुष की जीवनी बीस पंक्तियों में लिखो। उस में ये बातें बतलाओ—उसका जन्म और शिक्षा, उसके गुण,

उस के मुख्य कार्य, उसके जीवन की कोई विशेष घटना, उस की मृत्यु (यदि वह जीवित न हो तो)।

पाठ २४

धनवान के प्रति

[१]

सम्पदा के तुम हो सम्राट्।
दीनता का मैं हूँ सिरमौर॥
सदा भय के तुम रहते दास।
निडर, मैं भेद भला क्या और ?

[२]

तुम्हें है लक्ष्मी का अति मोह।
सदा मद मत्सर रहते साथ॥
न है मुझमें यह रंच प्रपंच।
साथ मेरे हैं दीनानाथ॥

[३]

...ो है चिन्ता नित्य।
...। से है क्या काम ?

६—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—
सिरमौर, प्रबल, ईर्षा, पुनीत ।

७—तीसरे छन्द में एक सकर्मक क्रिया और एक अकर्मक क्रिया छाँटो।

पाठ २५

बालक चन्द्रगुप्त

पाटलीपुत्र नगर के प्रान्त में पिपली कानन के मौर्य्य सेनापति का एक विभव-हीन गृह था। महापद्मनंद * के अत्याचार से मगध काँप रहा था। मौर्य्य सेनापति के बन्दी हो जाने के कारण उनके कुटुम्ब का जीवन किसी प्रकार कष्ट में बीत रहा था।

एक बालक उसी घर के सामने खेल रहा था। कई लड़के उसकी प्रजा बने थे और वह राजा बना था उन्हीं लड़कों में से वह किसी को घोड़ा और किसी को हाथी बना कर चढ़ता और दण्ड तथा पुरस्कार आदि देने का राजकीय अभिनय कर रहा था।

---

* यह राजा नन्द-वंश में से था और मौर्य राजाओं से पहले मगध पर राज्य करता था।

उसी ओर से एक ब्राह्मण जा रहे थे। उनका नाम था 'चाणक्य'। यह बड़े बुद्धिमान थे। उन्होंने बालक की राजक्रीड़ा बड़े ध्यान से देखी। उनके मन में कुतूहल भी [illegible] सूझा। उन्होंने [illegible] कुछ विनोद भी बालक राजा के पास [illegible] की तरह उस मुझे दूध पीने के लिए [illegible] ना की—राजन्! ...ए।

बालक ने राजोचित उदारता का अभिनय करते हुए, सामने चरती हुई गायों को दिखला कर कहा—इनमें से जितनी इच्छा हो तुम गायें ले लो।

ब्राह्मण ने हँसकर कहा—राजन्! ये जिसकी गायें हैं वह मारने लगे तो?

बालक ने सगर्व छाती फुलाकर कहा—किस का साहस है जो मेरे शासन को न माने? जब मैं राजा हूँ, तब मेरी आज्ञा अवश्य मानी जायगी।

ब्राह्मण ने आश्चर्य से बालक से पूछा—राजन् आपका शुभ नाम क्या है?

तब उसकी माँ वहाँ आ गई, और ब्राह्मण को हाथ जोड़ कर बोली—महाराज! यह बड़ा

धृष्ट लड़का है; इसके किसी अपराध पर ध्यान न दीजियेगा।

चाणक्य ने कहा—कोई चिन्ता नहीं, यह बड़ा होनहार बालक है। इसकी मानसिक उन्नति के लिए तुम इसे किसी प्रकार राजकुल में भेजा करो।

उसकी माँ रोने लगी। बोली—हम लोगों पर राजकोप है। और हमारे पति राजा की आज्ञा से बन्दी किये गये हैं।

ब्राह्मण ने कहा—बालक का कुछ अनिष्ट न होगा, तुम इसे अवश्य राजकुल में ले जाओ। इतना कह बालक को आशीर्वाद देकर वह चला गया। उसकी माँ बहुत डरते डरते एक दिन अपने चञ्चल और साहसी लड़के को लेकर राज-सभा में पहुँची। नन्द एक निष्ठुर, मूर्ख और भयजनक राजा था। उसकी राजसभा बड़े-बड़े [illegible]ओं से भरी रहती थी।

[illegible]ा लोग एक दूसरे के बल, बुद्धि [illegible] परीक्षा लिया करते थे, और इसके [illegible]प रखते थे।

उसी समय, जब बालक माँ के साथ राजस में पहुँचा, किसी राजा के यहाँ से, नन्द की रा सभा की बुद्धि का अनुमान करने के लिए, लं के बंद पिंजरे में मोम का सिंह बनाकर भेजा ग था, और उसके साथ यह कहलाया गया था पिंजड़े को खोले बिना ही सिंह को निकाल लीजिये।

सारी राजसभा इस पर विचार करने लगी। पर चाटुकार मूर्ख सभासदों को कोई उपाय न सूझा।

अपनी माता के साथ वह बालक यह लीला देख रहा था। वह भला कब मानने वाला था। उसने कहा 'मैं निकाल दूँगा'।

सब लोग हँस पड़े। बालक की ढिठाई भी कम न थी। राजा नन्द को भी आश्चर्य हुआ' नन्द ने कहा 'यह कौन है'

मालूम हुआ कि राजबन्दी मौर्य सेनापति क यह लड़का है। फिर क्या, नन्द को मूर्खता की अग्नि में एक और आहुति पड़ी। क्रोधित होकर

बोला 'यदि तू इसे न निकाल सकेगा, तो तू भी इस पिंजड़े में बन्द कर दिया जायगा'

उसकी माता ने देखा कि यह भी कहाँ से विपत्ति आई। परन्तु बालक निर्भीकता से आगे बढ़ा और पिंजड़े के पास जाकर उसको भली-भाँति देखा। फिर लोहे की शलाकाओं को गरम करके उस सिंह को गला कर पिंजड़े को खाली कर दिया।

सब लोग चकित रह गये। राजा ने पूछा 'तुम्हारा क्या नाम है' उसने कहा 'चन्द्रगुप्त'।

फिर राजा ने उस पर प्रसन्न होकर उसे* तक्षशिला के विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए भेजा। आगे चलकर यही बालक उसी ब्राह्मण चाणक्य की सहायता से चक्रवर्ती सम्राट 'चन्द्रगुप्त मौर्य' हुआ जो ईसा से ३२१ वर्ष पहले मगध में पाटलीपुत्र के राजसिंहासन पर बैठा और जिसने अपने बाहु-बल से सिकन्दर के यूनानी-साम्राज्य के आतंक से भारत को स्वतन्त्र किया।

*यह स्थान वर्तमान उत्तर-पश्चिम प्रान्त में है। इस काल में वहाँ पर एक बहुत बड़ा विद्यालय था जिसमें १०,००० से अधिक विद्यार्थी पढ़ते थे।

उसी समय, जब बालक माँ के साथ राजसभा में पहुँचा, किसी राजा के यहाँ से, नन्द की राजसभा की बुद्धि का अनुमान करने के लिए, लाख के बंद पिंजरे में मोम का सिंह बनाकर भेजा गया था, और उसके साथ यह कहलाया गया था कि पिंजड़े को खोले बिना ही सिंह को निकाल लीजिये।

सारी राजसभा इस पर विचार करने लगी। पर चाटुकार मूर्ख सभासदों को कोई उपाय न सूझा।

अपनी माता के साथ यह बालक यह लीला देख रहा था। वह भला कब मानने वाला था। उसने कहा 'मैं निकाल दूँगा'।

अभ्यास

१—चाणक्य कौन था ? उस की चन्द्रगुप्त की माता से क्या बातचीत हुई ?

२—यह कैसे अनुमान किया गया कि बालक चन्द्रगुप्त होनहार था।

३—चन्द्रगुप्त ने पिंजड़े में से शेर को कैसे निकाला ?

४—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—

पुरस्कार, अभिनय, कौतूहल, याचना, धृष्ट, होनहार, मानसिक, अनिष्ट, निष्ठुर, आहुति, बाहु-बल, आतङ्क।

५—होनहार विरवान के होत चीकने पात—इस से क्या आशय है।

६—किसी और महापुरुष के बाल्यकाल की घटनाओं से बतलाओ कि वह किस प्रकार उसी समय होनहार मालूम होते थे।

७—अन्तिम अनुच्छेद में आने वाली संज्ञाओं के विषय में बताओ कि प्रत्येक किस कारक में है।

बालक कृष्ण झूल रहे हैं

उस वक्त राना साँगा के बेटे उदयसिंह की उम्र केवल छः वर्ष की थी। उसके बड़े होने के समय तक के लिए बनवीर ही राजा बनाया गया। बनवीर के मन में यह बात खटकती रहती थी। वह सोचता था कि जिस दिन उदयसिंह बड़ा हो जायगा, उसी दिन मैं अलग कर दिया जाऊँगा। अंत में उसने पक्का इरादा कर लिया कि बिना उदयसिंह को मारे मैं राजा नहीं रह सकता।

उदयसिंह के माता-पिता मर चुके थे इस-लिए पन्ना नाम की एक दाई उनका पालन-पोषण करती थी। उसके भी उदयसिंह की ही उमर का एक लड़का था। वह दोनों को खूब चाहती थी। दोनों लड़के साथ ही खाते-पीते और खेलते-कूदते थे।

एक दिन रात को बनवीर अपने महल से तलवार लेकर निकला। पहिले तो वह विक्रमादित्य के कोठे में पहुँचा। बेचारे भोजन करके पलँग पर लेटे ही थे। बनवीर ने जाते ही उनकी गर्दन पर ऐसी तलवार मारी कि उनका सिर धड़ से अलग हो गया। उन्हें मरते देख महल की स्त्रियाँ रोने-पीटने लगीं।

अभ्यास

१—दोनों छन्दों के अर्थ अपनी सरल भाषा में लिखो।
२—ह्वै, माखन और कमरिया के शुद्ध रूप बताओ।
३—ये दोनों पद सूरदास जी के रचे हुए हैं। सूरदास हिन्दी के बड़े प्रसिद्ध कवि हो गये हैं। देखो यह पद कितने सुन्दर हैं। इन को याद कर लो।

पाठ २७

पन्नादाई और उदयसिंह

राजपूताने में चित्तौर नाम का एक राज्य है। पहिले समय में वहाँ बड़े बड़े देश-भक्त और बहादुर लोग हो गये हैं। विक्रमादित्य वहीं के राजा थे। उनसे वहाँ के सब लोग नाराज थे, क्योंकि वे राज-काज की तरफ़ ध्यान नहीं देते थे और किसी का कहना भी नहीं मानते थे। एक दिन उन्होंने बूढ़े सरदार करमसिंह को भरे दरबार में घूँसा मार दिया। इस पर राजपूत लोग बिगड़ उठे। उन लोगों ने एका करके विक्रमादित्य को गद्दी से उतार दिया और बनवीर को राजा बनाया बनवीर पृथ्वीराज की दासी का बेटा था।

डाँट कर पूछा 'उदयसिंह कहाँ है?' पन्ना की बोली बन्द हो गई। ओह! उदयसिंह के पीछे वह अपने बेटे की हत्या कराने को राजी हो गई। उसने चुपचाप अपने बेटे की तरफ हाथ से इशारा कर दिया। दुष्ट बनवीर ने एक ही हाथ से उस बालक के दो टुकड़े कर दिये। बेचारी पन्ना उदयसिंह के बचाने के लिए तनिक भी न रोई—उसकी आँखें आँसुओं से गीली तक न हुईं। उदयसिंह को मरा जान, महल की स्त्रियाँ और भी रोना-पीटना मचाने लगीं।

इसी गड़बड़ी में पन्ना आँसू बहाती हुई उतनी रात को महल से निकल खड़ी हुई और नदी के किनारे पहुँची। रातों-रात कई सरदारों के पास पहुँची पर किसी ने भी बनवीर के डर के मारे उदयसिंह को अपने यहाँ न रक्खा। तब वह कमलनेर के क़िले में पहुँची। यहाँ आशाशाह नाम का एक सरदार रहता था। पन्ना के समझाने बुझाने से इस सरदार ने उदयसिंह को अपना भतीजा बतलाकर अपने यहाँ रख लिया।

यहीं उदयसिंह बड़े हुए और फिर वे चित्तौड़ के राजा बनाये गये।

पन्ना इस समय दोनों लड़कों को सुल
बैठी-बैठी कुछ सोच रही थी। एकाएक मह
रोने की आवाज़ सुन कर उसे बड़ा अचरज हु
इतने में एक नाई वहाँ जूठन उठाने को आ
पन्ना ने उससे इस रुलाई का कारण पूछा।
हाल सुन कर वेचारी मारे डर के सन्न हो ग
वह जान गई कि जब वनवीर ने विक्रमादित्य
मार डाला है, तब वह उदयसिंह को भी जीत
न छोड़ेगा। उसने झपट कर एक टोकरा उठाया
और उसमें सोते हुए उदयसिंह को लिटा दिया
तथा ऊपर से कुछ कपड़े डाल दिये। फिर उसने
नाई से कहा 'तू इसे फ़ौरन नदी के किनारे लेजा
और थोड़ी देर वहीं ठहरना। मैं भी जल्दी से
आती हूँ।' यह नाई बड़ा ईमानदार और सच्चा
था। वह पलक मारते टोकरा लेकर महल से बाहर
हो गया। इसके बाद पन्ना ने अपने बेटे को उदय-
सिंह के पलँग पर सुला दिया।

इतने में ही वनवीर हाथ में नंगी तलवार
लिये वहाँ आ पहुँचा। ख़ून से भरी लपलपाती
तलवार देख, पन्ना के प्राण सूख ...
कर एक तरफ़ खड़ी हो

(२)

इधर घना वन हरा भरा है,
उपल[१] पर तरुवर उगाया जिसने;
अचंभा इसमें है कौन प्यारे,
पड़ा था भारत जगाया किसने ?

(३)

कभी हिमालय के शृङ्ग चढ़ना,
कभी उतरते हैं थक के श्रम से;
थकन मिटाता है मंजु झरना,
बटोही छाये में बैठे थक के।

(४)

गिरीश भारत का द्वार-पट है,
सदा से है यह हमारा संगी;
सुरनि भगीरथ[२] की पुण्यधारा,
बगल में बहती हमारी गंगी।

(५)

पता दे गंगा, कहाँ गया है,
प्रताप, पौरुष विभव हमारा ?

१—पत्थर,

२—पुराणों में ऐसी कथा है कि गंगा जी को राजा भगीरथ स्वर्ग से लाये थे।

अभ्यास

१—चित्तौर का राजा विक्रमादित्य गद्दी से क्यों उतारा

२—बनवीर कौन था ? उसको चित्तौर की गद्दी कैसे मि

३—बनवीर ने उदयसिंह को मारने की क्यों ठानी ?

४—पन्नादाई ने उदयसिंह की जान कैसे बचाई ?

५—इस पाठ से तुमको क्या शिक्षा मिलती है ?

६—नीचे लिखे पदों और मुहाविरों का अपने वाक्यों में [प्रयोग करो:—

बात खटकना, पालन-पोषण, मग्न हो जाना, पलक मारना, प्राण सूख जाना।

७—पहले अनुच्छेद में आने वाले निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक सर्वनामों को छाँटो।

पाठ २८

उद्‌बोधन

(१)

हिमालय सर है उठाये ऊपर,

बगल में झरना झलक रहा है;

उधर शरद के हैं मेघ छाये,

इधर फटिक[1] जल

१—बिल्लौरी पत्थर के समान सफ़ेद

उठो अँधेरा मिटा है प्यारे,
बहुत दिनों पर दिवाली आई।

अभ्यास

१—क्या इस कविता का शीर्षक कोई दूसरा बता सकते हो?

२—इस कविता से क्या शिक्षा मिलती है?

३—शृङ्ग, गिरीश, मंजु, पौरुष, चाव के अर्थ बताओ।

४—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो-प्रताप प्रभुत्व, वैभव और प्रभा।

५—इस कविता में कृष्ण जी के लिए कौन-कौन-से शब्द आये हैं। इसी अर्थ के दो शब्द और बताओ

६—चौथे और सातवें छन्द के अर्थ बतलाओ।

७—इस कविता को कण्ठस्थ कर लो।

पाठ २९

गुरु नानक

गुरु नानक सिक्ख-धर्म के प्रवर्तक गुरु माने जाते हैं। उनके पिता कालूचन्द खत्री लाहौर जिले में तालवन्दी गाँव के पटवारी थे। गुरु नानक का जन्म संवत् १५२६ में हुआ।

कहाँ युधिष्ठिर, कहाँ है अर्जुन,
कहाँ है भारत का कृष्ण प्यारा?

(६)

सिखा दे ऐसा उपाय मोहन,
रहें न भाई पृथक् हमारे;
सिखा दे गीता* की कर्म-शिक्षा,
बजा के वंशी सुना दे प्यारे।

(७)

अँधेरा फैला है घर में माधो,
हमारा दीपक जला दे प्यारे;
दिवाला देखो हुआ हमारा,
दिवाली फिर भी दिखा दे प्यारे।

(८)

हमारे भारत के नवनिहालो,
प्रभुत्व, वैभव, प्रकाश धारे
सुहृद हमारे, हमारे प्रियवर,
हमारी माता के चख के तारे।

(९)

न अब भी आलस में पड़ के बैठो,
दशों दिशा में प्रभा है छाई

---

* गीता हिन्दुओं की एक धर्म-पुस्तक है जिसमें वह उपदेश है जो कृष्ण जी ने अर्जुन को दिया था।

बचपन में भी नानक बड़ी शांत प्रकृति के थे। उनको हँसी-खेल अच्छा नहीं लगता था। वे सदा एकान्त में बैठ कर कुछ न कुछ सोचा करते थे। जब नानक ६ वर्ष के हुए, तो उनके पिता ने इन्हें पाठशाला में भेजा। आपने जाते ही गुरु जी से पूछा कि "क्या आप मुझे पढ़ा सकते हैं?" गुरु जी ने उत्तर दिया, 'मैं वेद और शास्त्र का ज्ञाता हूँ, भला तेरे ऐसे लड़के को पढ़ाने में मुझे कौन कठिनाई होगी?" नानक बोले, "मैं इन पुस्तकों की विद्या नहीं समझता, अगर आप मुझे ईश्वर के पास पहुँचने की विद्या दे सकें तो मैं समझूँगा कि आप मुझे पढ़ा सकते हैं।" यह सुन कर गुरु जी बेचारे दंग हो गये। फिर उन के पिता ने इन्हें संस्कृत पढ़ाने के लिए एक पंडित के पास भेजा। पंडित जी ने उन्हें 'ॐ' लिख कर याद करने को दिया। नानक ने पंडित जी से ॐकार का अर्थ पूछा। बेचारे पंडित जी जानते तो बतलाते।

नानक बचपन से ही ईश्वर के बड़े भक्त थे। सदा साधु-संतों की सेवा करना ... में ... समझते थे। जो कुछ रुपया-पै

का यह बर्ताव देख कर बड़े चिंतित रहते थे। अंत में उन्होंने नानक को, उन के बहनोई के पास भेज दिया। उन्होंने नानक को नवाब

गुरु नानक
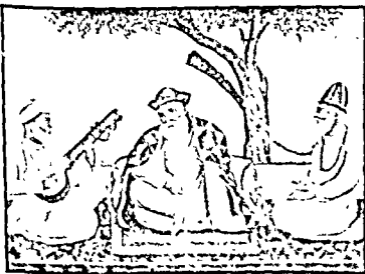
दौलतखाँ के मोदीखाने* में नौकर करा दिया। यहीं उन का विवाह भी हुआ। उन के दो पुत्र हुए। एक का नाम श्रीचन्द था जिन्होंने उदासी सम्प्रदाय चलाया। दूसरे का नाम लक्ष्मीचंद था।

* भंडार, स्टोर।

क की आयु ९ वर्ष की हुई, तो
ने इन का उपनयन-संस्कार करना
। जब पुरोहित जी इन को जनेऊ
तो नानक बोले, "पुरोहित जी,
ताइए इस जनेऊ का क्या उपयोग
जी ने उत्तर दिया कि "हमारे
ज्ञा है कि हर एक ब्राह्मण, क्षत्रिय
यज्ञोपवीत पहिनना चाहिए, क्योंकि
ने बिना वह कुछ भी धर्म-कार्य
ा और यह जनेऊ पहिनने वाले
ा है।" नानक ने उत्तर दिया कि
र के लिए ऐसे बाह्य आडम्बर
रकता है ? अपने मन को पवित्र
ईश्वर-भक्ति ही सर्वोत्तम उपाय
अपनी माँ के समझाने-बुझाने पर
ाहिनना स्वीकार किया।

को घर रहना अच्छा न लगा।
कर बैठने लगे। उन के पिता उन

वर्णाश्रम-धर्म को न मानते थे। उनके लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सब बराबर थे। वे कहते थे कि वही मनुष्य श्रेष्ठ है जिसका आचरण और मन पवित्र है। जन्म से ही कोई ऊँचा-नीचा नहीं हो सकता। अच्छे-अच्छे कर्म करने वाला ही ईश्वर को प्रिय होता है चाहे वह किसी भी जाति का हो। ईश्वर एक ही है। हिन्दू उसे राम कहते हैं और मुसलमान रहीम। मन्दिर और मसजिद दोनों एक समान पवित्र हैं।

इन्हीं उपदेशों के कारण दोनों हिन्दू और मुसलमान उनको आदर की दृष्टि से देखते थे। हिन्दू लोग उन्हें हिन्दू समझते थे और मुसलमान लोग उन्हें मुसलमान मानते थे। नानक की मृत्यु के उपरान्त हिन्दू कहने लगे कि नानक हिंदू हैं। अतएव हम लोग उनके शव की दाह-क्रिया करेंगे, पर मुसलमान कहते थे कि नानक मुसलमान हैं। अतएव उनके शव को हम दफ़न के लिए ले जाएँगे। कहते हैं कि जब हिन्दू मुसलमानों ने कफ़न दूर कर देखा तो सिवा गुलाब के फूलों के कुछ न पाया। अन्त में दोनों हिन्दू मुसलमानों ने वे फूल आधे आधे बाँट लिये। हिन्दुओं ने

जब तक वे मोदीख़ाने में रहे। तब तक दीन दुखियों की भरपूर सहायता करते रहे। कुछ लोगों ने जाकर नवाब से शिकायत की कि नानक मोदीख़ाने का सब समान लुटाये देता है। नवाब को बड़ा क्रोध आया। उसने आकर उनके हिसाब-किताब की जाँच की और उसको बिलकुल ठीक पाया। अन्त में नानक ने यह नौकरी भी छोड़ दी है।

नौकरी छोड़ने के उपरान्त नानक भ्रमण के लिए निकले। उन्होंने बड़ी लम्बी-चौड़ी यात्राएँ कीं। भारत के सारे तीर्थों में जाकर भी उन्हें सन्तोष न हुआ। उन्होंने मक्के और मदीने तक की यात्रा की। जहाँ जहाँ वे जाते थे वहाँ वहाँ लोगों को ईश्वर-भक्ति करने का उपदेश देते थे। धीरे धीरे उनकी ख्याति बढ़ती गई। वे नये नये भजन बनाकर गाते थे। इन भजनों का उनके

पाठ ३०

वर्षा की बहार

(१)

घिर आई घन घटा, घटा कर घोर घाम को।
चली और ही हवा, न गर्मी रही नाम को॥
पड़ने लगी फुहार, हुआ अभिषेक भूमि का।
नव-अभिनय की हुई यहाँ अभिनीत भूमिका॥
किसी महा नटराज ने,
प्रकृति नटी को साज कर।
इन्द्रजाल का दृश्य यह,
दिखलाया आकाश पर॥

(२)

आकृति अपनी बदल बदल कर बादल, कैसे।
करें तमाशे, बने प्रगल्भ विदूषक जैसे॥
कभी गरज कर वीर पात्र का अभिनय करते।
बिजली की तलवार खींच नभ बीच विचरते॥
कभी "धनुष" धारण किये,
बिन्दु-बाण वर्षा करें।
कभी हवा से हार कर,
कायर से भागे फिरें॥

अपने हिस्से के फूलों को जलाया और मुसल-मानों ने दफ़न किया। आज दिन भी गुरु नानक का नाम बड़े आदर से लिया जाता है।

अभ्यास

१—गुरु नानक कौन थे ?

२—इनके बचपन की कुछ घटनाएँ वर्णन करो।

३—गुरु नानक के मुख्य उपदेश क्या थे।

४—गुरु नानक के चलाये हुए मत को क्या कहते हैं ? इस मत के मुख्य सिद्धान्त क्या हैं ?

५—उपनयन संस्कार से क्या समझते हो ?

६—"ग्रन्थ साहब" के विषय में तुम क्या जानते हो ?

७—वाक्यों में प्रयोग करो—

प्रवर्तक, दंग हो जाना, शारीरिक, मानसिक, सम्प्रदाय, आच-रण, उपरान्त, शव।

८—'प्रकृति' शब्द के कौन-कौन से अर्थ होते हैं ?

९—गुरु नानकके समान अन्य महात्माओं के नाम बताओ, और उनमें से किसी एक की जीवनी लिखो।

१०—पहले अनुच्छेद में कौन-कौनसे संज्ञा शब्द व्यक्तिवाचक हैं।

पाठ ३१

तूतुनखामन की समाधि

अभी थोड़े ही दिन हुए कि इङ्गलैण्ड के विद्वान् अर्ल कार्नरवान तथा अमरीका निवासी मिस्टर हावर्ड कार्टर ने मिस्र देश में राजा तूतुन-खामन की समाधि का पता लगाया था। यह समाधि लगभग तीन सहस्र वर्ष पुरानी है। इसमें बहुत से रत्नाभूषण तथा अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ मिली हैं। इस समाधि की खोज कैसे हुई सो सुनिये।

प्राचीनकाल में मिस्र देश निवासी मुर्दों को जलाते या गाड़ते न थे, वरन उन्हें यत्नपूर्वक सुर-क्षित रखते थे उनका विश्वास था कि मर कर मनुष्य फिर जन्म लेते। अतएव वे शव पर नाना-प्रकार की औषधियें लगा, तथा उसे वस्त्रों से लपेट कर लकड़ी के एक बक्स में रख देते थे। इसे ममी कहते हैं। ये ममी सुन्दर समाधि-भवनों में रख दी जाती थीं। जहाँ वे सुरक्षित रहती थीं। इस प्रकार रक्खी हुई लाशें सहस्रों वर्ष तक नष्ट

वाह वाह यह घटा उठी है कैसी काली।
उद्वेलित हो चला उदधि जैसे छविशाली॥
बिजली की यह लहर अग्नि की शिखा बनी है।
रत्न-छाँह सी इन्द्र-धनुष की ज्योति घनी है॥

फेन-सदृश बकपंक्ति भी,
उसमें शोभा पा रही।
धन्य धन्य वर्षा नई,
यह बहार दिखला रही॥

अभ्यास

१—वर्षा की बहार पर एक छोटा सा निबन्ध लिखो।

२—गरमी की ऋतु और वर्षा ऋतु में क्या अन्तर है?

३—नटराज, नहीं विदूषक—इन शब्दों का प्रयोग नाटक में होता है। अपने गुरुजी से इनके अर्थ पूछो।

४—नीचे लिखे शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो:—
अभिषेक, इन्द्रजाल, आकृति, प्रगल्भ, उद्वेलित

५—(क) पड़ने लगी फुहार, हुआ अ.
अभिषेक किस प्रकार हुआ।
(ख) बिन्दु-बाण वर्षा क
आशय है?

नहीं होती थीं, उनमें से कितनी आज भी अच
दशा में पाई गई हैं।

शव को ममी करते समय उसके साथ समाधि
में कुछ रुपया पैसा भी रख दिया जाता था।
राजाओं की ममी के साथ तो अनेक बहुमूल्य
पदार्थ, तरह तरह की सामग्री, तथा कितने ही
काग़ज़-पत्र भी रख दिये जाते थे। इन काग़ज़ों
पर राजाओं के नाम, उनका वृत्तान्त तथा अन्य
बहुत सी आवश्यक बातें लिखी रहती थीं।
काग़ज़ अन्यत्र कहीं नहीं पाये जाते थे।

जब मिश्र के राजा निर्बल होगये तो वे अरब
देश के डाकू और लुटेरों की सहायता से शवों
के साथ रक्खे हुए काग़ज पत्र तथा अन्य पदार्थों
को चुरा कर अरब के बाज़ारों में बेचने लगे। एक
दिन ब्राग्स नामक एक अंग्रेज़ को एक ऐसा ही
काग़ज़ मिल गया। उसने बड़े परिश्रम से इस
समाधि-क्षेत्र का पता लगाया। फिर क्या था?
कितनी ममी जहाज़ पर रख इङ्गलैण्ड भेज दी
गईं। वहाँ विद्वानों ने इनके आधार पर अनेक
ई ऐतिहासिक बातें ढूंढ निकालीं।

मन की अनेक बहुमूल्य चीज़ें मिलीं पर उनकी ममी कहीं दिखाई न पड़ी। एक दूसरे कमरे में और बहुमूल्य पदार्थ पाये गये पर शव वहाँ भी न मिला। अन्त में एक और दीवार तोड़, चोरों की तरह सेंध लगा, कार्टर साहब ने तीसरे कमरे में प्रवेश किया। वहाँ राजा का शवाधार मिलने पर इन लोगों के आनन्द और आश्चर्य का ठिकाना न रहा। शव के साथ अनेक रत्नाभूषण तथा कितनी ही अन्य वस्तुएँ मिलीं।

इस समाधि में जितनी सम्पत्ति मिली है उतनी क्या, उसका शतांश भी संसार की किसी समाधि में आज तक नहीं देखा गया। पहिले कमरे में कई हाथी दाँत की नक्काशी के पलंग, असंख्य सुन्दर पेटियाँ, राजा की पोशाक, मणि-जटित स्वर्ण-पादुकाएँ, आबनूस की चौकियाँ, शिल्प-सौन्दर्य में अद्वितीय राज सिंहासन, सुवर्ण की जड़ाऊ कुर्सी, चार रथ, कई सुन्दर छड़ियाँ अद्भुत बाजे, बिल्लौरी झारियाँ, मिट्टी के बरतन, भोजन की सामग्रीऔर कई काग़ज़ मिले हैं। दूसरा कमरा फर्श से छत तक सामानसे भरा था। जिस कमरेमें राजा का शव मिला है उसके द्वार पर काले रंग का एक

स्थार खड़ा था, एक बैल का सिर देवता अनूबिस की मूर्ति, राजा तूतुनखामन की एक सुवर्णकी और दो मनुष्य के क़द की काले पत्थर की मूर्तियाँ, ये तथा अन्य असंख्य बकस व पेटियाँ जिन पर मुहरें हो रही हैं, पाई गई हैं। बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि आज-तीन हज़ार वर्षों के बाद भी प्रत्येक वस्तु प्रायः उसी अवस्था में मिली है जैसी पहिले थी। समय ने उसकी दशा में कोई परिवर्तन नहीं किया। कहाँ तक कहें, कई फूल-मालाएँ ऐसी मिली हैं, मानो आज ही माली ने उन्हें सजा कर बनाया हो। इत्रदानों से आज भी वैसी ही सुगन्ध निकल रही है।

इस समाधि के आविष्कार से यह आशा की जाती है कि अब मिस्र के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें मालूम होंगी और कम से कम उस युग का इतिहास, जो अभी तक अपूर्ण है अवश्य ही पूर्ण हो जायगा। यह युग मिस्र के सर्वश्रेष्ठ गौरव का युग है। राजा तूतुन-खामन ही के राज्यकाल में मिस्र की सभ्यता चरम सीमा तक पहुँच गई थी। इसके थोड़े ही दिन पश्चात् मिस्र का अधःपतन प्रारम्भ हुआ था।

चिड़ियाँ चहक उठीं पेड़ों पर।
बहने लगी हवा अति सुन्दर॥
नभ में न्यारी लाली छाई।
धरती ने प्यारी छवि पाई॥

(२)

ऐसा सुन्दर समय न खोओ।
मेरे प्यारे अब मत सोओ॥
भोर हुआ सूरज उग आया।
जल में पड़ी सुनहली छाया॥
मिटा अँधेरा हुआ उजाला।
किरनों ने जीवन-सा डाला॥
जाग जगमगा उठा जगत सब।
मेरे लाल जाग तू भी अब॥

(३)

जागो प्यारे हुआ सवेरा।
मैं देखूँ हँसता मुख तेरा॥
आँखें खोल कमल विकसाओ।
होंठ हिला कर फूल खिलाओ॥
ठुमुक-ठुमुक आँगन में डोलो।
किलक बोलियाँ मीठी बोलो॥
मुझे सुधा सी जी उमगा कर।
छुनुक झुनुक पैंजनी बजा कर॥

नई पौध उपजाने वाला।
कीरति-बेलि उगाने वाला॥
भरा लयालय, बड़ा निराला।
तू है मधुर रसों का प्याला॥
जिनकी महक बहुत है आला।
तू है उन फूलों का थाला॥

(७)

तू है ऐसा लाल हमारा।
जो सब लालों से है न्यारा॥
तू है ऐसा रतन हमारा।
जिस पर सब रतनों को वारा॥
तू है खिला गुलाब हमारा।
सब फूलों में सजा-सँवारा॥
तू है सुन्दर चाँद हमारा।
सब चाँदों से कोमल प्यारा॥

(८)

तेरे मुखड़े का उजियाला।
है अँधियाला खोने वाला॥
तेरे हाथों की यह लाली।
है उलझी सुलझाने वाली॥
तेरी यह प्यारी किलकारी।
हरती है आकुलता सारी॥

तेरी मन्द मन्द मुसकाना।
है जादू करता मनमाना॥

(६)

तू उस सीपी का है मोती।
जिस की कान्ति दिव्य है होती॥
तू है हीरा उस थल वाला।
जहाँ रहे सब काल उजाला॥
तू है खिला कमल उस सर का।
जहाँ राज है सरस मधुर का॥
नहिं कुम्हला सकता जिसका दल।
तू उस तरु का है सुन्दर फल॥

अभ्यास

१—तीसरे, नवें और दसवें छन्दों का अर्थ सरल भाषा में बतलाओ।

२—इन लोरियों को याद करके अपने गुरुजी को सुनाओ।

३—कमल का फूल कैसा होता है और यह कहाँ उगता है?

४—जिस पर सब रतनों की वारा—यहाँ वारा शब्द का क्या अर्थ है? प्यारे तू है उसकी थाती—यहाँ तू शब्द से किसकी ओर इशारा है?

५—सुधा, आकुलता, कान्ति, दिक और थाती शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

६—कोई और लोरी तुम्हें याद हो तो सुनाओ।

पाठ ३३

पानी

हमारे जीवन के लिए हवा का पहला काम है और पानी का दूसरा। हवा बिना मनुष्य कुछ ही मिनटों तक जी सकता है और पानी बिना देश काल के अनुसार मनुष्य ज्यों त्यों कई दिन काट सकता है। फिर भी यह निर्विवाद है कि दूसरी जरूरतों की भाँति वह बहुत दिनों तक पानी बिना नहीं जी सकता है। पीने के लिए पानी मिलना

रहे, तो मनुष्य अनाज खाये बिना भी बहुत दिनों तक निभा सकता है। हमारे शरीरमें सत्तर प्रति सैकड़े से भी अधिक पानी होता है। हमारी सभी ख़ूराकों में थोड़ा-बहुत पानी रहता है। यद्यपि पानी हमारे लिए इतनी जरूरी चीज है, तो भी हम उसकी हिफ़ाज़त बहुत ही कम करते हैं। हवा और जल सम्बन्धी लापरवाही के कारण हम लोगों को महामारी इत्यादि रोग घेरे रहते हैं। लड़ाई में फँसी हुई फौजों मे प्रायः काल-ज्वर फूट निकलता है। इस का दोष पानी के मत्थे मढ़ा जाता है। क्योंकि लड़ाई में फ़ौजों को जहाँ-तहाँ का जैसा-तैसा पानी पीना पड़ता है। शहर के आदमियों में भी कभी-कभी यह बुखार फूट निकलता है। इस का कारण प्रायः पानी ही होता है।

पानी बिगड़ने के दो कारण होते हैं। पहला पानी को ऐसी जगह मिलना जहाँ साफ़ रह न —े और दूसरा हमारा पानी को बिगाड़ना।

दिचकने। जैसे नदियों के पानी में हम अट्ट-सट्ट चीज़ें डालते रहते हैं और उसी को नहाने धोने के काम में भी लाते हैं। नियम है कि नहाने के स्थान का पानी कभी पीने के काम में नहीं लाना चाहिये। नदी का पानी जिस दिशा में आता हो, उसी दिशा में ऊपर से जहाँ कोई नहाता न हो, लेना चाहिए। नीचे का भाग नहाने-धोने के लिए और ऊपर का भाग पीने के लिए रक्खा जाय। जब कोई फौज नदी के पास छावनी डालती है, तब एक आदमी तैनात कर दिया जाता है कि वह उस जगह से बहाव के ऊपर की ओर किसी मनुष्य को नहाने-धोने न दे। जान-बूझकर ऐसा करने वालों को सज़ा मिलती है। देश में जहाँ ऐसा अलग प्रबन्ध नहीं होता, वहाँ चतुर परिश्रमी स्त्रियाँ प्रायः नदी की रेत में गड्ढा खोद कर उस में से पानी भरा करती हैं। यह रिवाज बहुत अच्छा है। वह पानी रेत इत्यादि से छन कर मिलता है। कुएँ का पानी पीने में प्रायः जोखिम रहा करती है। कच्चे कुओं में मल-मूत्र का रस ज़मीन से छन-छन कर मिल जाया करता है और नहीं कभी-कभी उस में पत्ती मर

मर कर सड़ जाते हैं। ये प्रायः उन के अन्द
घोंसले बना लेते हैं। कुएँ में ढलवी जगह न हुई
तो पानी भरने वालों के पैर इत्यादि का मैल उड़
कर पानी को बिगाड़ देता है। इसलिए कुएँ का
पानी पीने में बहुत सावधानी की ज़रूरत है।
टंकियों (हौज़ों) में भरा हुआ पानी भी प्रायः
ख़राब पानी होता है। टंकियों का पानी यदि स्वच्छ
न हो तो उन्हें ढके रहना चाहिए। कभी-कभी
उन को धोते रहना चाहिये और उन तालाब
आदि को, जहाँ से उनमें पानी आता हो, साफ़
रखना चाहिए। सफ़ाई की कोशिश बहुत ही कम
मनुष्य करते हैं। इसलिए पानी के सब दोष दूर
करने का सब से अच्छा उपाय यह है कि पानी
को पहले आध घण्टे तक उबाले, और ठण्डा कर
के बिना हिलाये एक दूसरे बर्तन में मोटे और
ाफ़ कपड़े में छान कर उसे पीने के काम में
ाये। पर याद रहे कि इतने से ही मनुष्य अपने
र्तव्य से मुक्त नहीं हो सकता। सार्वजनिक
योग में आने वाला पानी जैसे उस की मिल्कि-
है, वैसे ही उस मुहल्ले या गाँव में रहने
ों की मिल्कियत है। उस मिल्कियत की रक्षा

संरक्षक की हैसियत से करने के लिए मनुष्य मजबूर है। इस से कोई काम ऐसा न होना चाहिए कि सार्वजनिक उपयोग में आने वाला पानी खराब हो। उसके द्वारा नदी या कुएँ में किसी प्रकार की खराबी न पैदा हो। अर्थात् उसे चाहिए कि वह पानी के पीने वाले भाग को नहाने-धोने के काम में न लाये, उसके पास मल-मूत्र न त्याग करे। पीने के काम में आने वाले पानी के समीप मुर्दा न जलाये और उस की राख आदि उसमें न डाले।

बहुत सँभाल रखते हुए भी हमें बिल्कुल साफ़ पानी नहीं मिलता। उस में प्रायः क्षार, सड़ी हुई घास-फूस इत्यादि का भाग रहता ही है। बरसाती पानी सब से अधिक साफ़ गिना जाता है। परन्तु हमारे पास पहुँचने के पहले ही उस में हवा में उड़ने वाले रज-कण आदि मिल जाते हैं। शरीर पर साफ़ पानी का असर बड़ा विलक्षण होता है। इसी से कितने ही अङ्गरेज़ डाक्टर अपने रोगियों को डिस्टिल्ड अर्थात् बना हुआ पानी देते हैं। कब्ज़ की शिकायत वाले को इस स्रोत के पानी का प्रत्यक्ष फल मिल सकता है।

ऐसा पानी सभी केमिस्ट (विलायती दवा बे
वाले) बेचते हैं। डिस्टिल्ड पानी और उसके उ
चारों पर हाल में एक पुस्तक निकली है। उस
लेखक की राय है कि इस पुस्तक में दी हुई
रीति से शुद्ध किया हुआ पानी पीने से बहुतेरे
रोग मिट सकते हैं। इसमें अतिशयोक्ति है,
लेकिन बिल्कुल शुद्ध किये हुए पानी का शरीर
पर अधिक असर होना कुछ असम्भव नहीं है।
बहुत आदमी नहीं जानते कि पानी हलका औ
भारी दो तरह का होता है। पर यह जानना
चाहिये कि जिस पानी में साबुन मलने से फेन
तुरन्त न उठे, पानी का रंग भर बदल जाय, उसे
भारी समझना चाहिए। उस पानी में क्षार बहुत
है। जैसे खारी पानी में साबुन का उपयोग नहीं
हो सकता, वैसे ही भारी पानी में भी उस का
उपयोग मुश्किल होता है। भारी पानी में अनाज
मुश्किल से पकता है। भारी पानी पीने से अनाज
चने में भी कठिनाई पड़नी चाहिए और पड़नी
है। भारी पानी बहुत ही खारा होता है।
का पानी स्वाद में मीठा रहता है। कुछ लोगों
राय है कि भारी पानी में पोषक पदार्थ अधिक

होते हैं। उनके पीने से अधिक फ़ायदा है। परन्तु अधिकतर हलका पानी पीना ही ठीक समझा जाता है। बरसात का पानी सब से अधिक साफ़ और स्वाभाविक समझा जाता है। सब उसे हलका और काम में लाने योग्य मानते हैं। भारी पानी को उबालने के बाद आध घण्टे तक चूल्हे पर रहने दिया जाय तो कभी-कभी हलका हो जाता है। चूल्हे से उतारने पर बताई रीति से उसकी परीक्षा करनी चाहिए।

प्रायः पूछा जाता है कि कब कितना पीना चाहिए। इसका सीधा उत्तर है कि प्यास लगने पर प्यास मिटने भर को पीना चाहिए। खाते समय और खाने के पीछे पानी पीने में कोई हर्ज नहीं। हाँ, खाने समय इस विचार से कि खुराक जल्दी गले से उतर जाय, पानी पीना ठीक नहीं। यदि खुराक अपने आप गले से नीचे न उतरे तो समझो कि अच्छी तरह से कुचली नहीं गई या मेदा उसे माँगता नहीं।

साधारणतः पानी पीने की ज़रूरत नहीं है और न होनी ही चाहिए। जैसे हमारे शरीर की सत्तर प्रति सैकड़ा पानी है वैसे ही

खूराक में भी है बहुतेरी खूराकों में तो ७० प्रति सैकड़े से भी अधिक पानी रहता है। कोई ऐसा अनाज नहीं है, कि जिसमें पानी बिल्कुल न हो। इसके सिवाय भोजन पकाते तो काफी पानी डालते ही हैं। फिर पानी की ज़रूरत क्यों होती है? यहाँ संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि जिन लोगों की खूराक में खोटी, प्यास पैदा करने वाली चीज़ें, जैसे मिर्चा, मसाला इत्यादि नहीं रहते उन्हें पानी कम ही पीना पड़ता है। जो ताज़े मेवों से खूराक पूरी कर लेते हैं, उन्हें खाली पानी की इच्छा शायद ही हो, जिसे अकारण ही बहुत प्यास लगती हो उसे कोई बीमारी समझो। चाहे जैसा पानी पीते हुए भी अनेक मनुष्यों को कोई हानि नहीं पहुँचती देख कर कुछ लोग चाहे जैसा पानी पीते दिखाई पड़ते हैं। हवा के बयान में ऐसी धारणा का समाधान किया गया है। हमारे खाने में कुछ ऐसे अच्छे गुण हैं, जिनसे वह अनेक प्रकार के ज़हरों को नष्ट कर डालता है। तेज़ तलवार को काम में लाकर यदि हम उसकी धार फिर से तेज़ न करें तो वह ठीक तौर पर काम नहीं देती। यही हाल खून का है। हम सदा खराब पानी पिया

करेंगे तो खून अन्त में अपना काम करने में असमर्थ हो जायगा।

अभ्यास

१—जीवन के लिए कौन-कौन सी चीजें बहुत जरूरी हैं ?

२—पानी किस तरह खराब हो जाता है ?

३—कैसा पानी पीने के लिए सबसे अच्छा रहता है ?

४—पीने के पानी के स्थानों पर किस प्रकार सफाई रहनी चाहिए ?

५—नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग अपने वाक्यों में करो —निर्विवाद, अट्ट-सट्ट, जोखिम, सार्वजनिक, उपयोग, निश्चित, संरक्षक, विलक्षण, उपचार, अतिशयोक्ति, सचेत, धारणा, समाधान।

६—अकारण—इस शब्द में 'अ' का अर्थ नहीं है, अर्थात् बिना कारण के। इसी प्रकार असमर्थ, असमान आदि शब्द हैं। तुम ऐसे ही [illegible] उदाहरण और दो।

७— ... में आने वाले अव्यय शब्द, उनके भेद

श्रम

४—यह कविता बड़ी सुन्दर है; कवि ने किसानों की महनत का एक रूप सा खड़ा कर दिया है। इसे कण्ठस्थ कर लो।

पाठ ३५
वायुयान
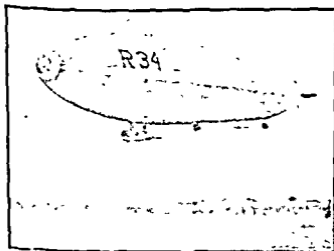
हवाई जहाज

जिस किसी वस्तु पर आरोहण करके मनुष्य वायु में उड़ सके उसे वायुयान कहते हैं। हिन्दुओं के प्राचीन ग्रंथों में विमानों का वर्णन आता है जिन पर चढ़-चढ़ कर लोग बहुत दूर-दूर तक जाया

करते थे। परन्तु इधर सहस्रों वर्षों से तो न इनको किसी ने देखा न सुना।

उधर योरुप में लोग वायुयान का नाम सुन कर हँसते थे। यह किसी को स्वप्न में भी विश्वास न आता था कि मनुष्य किसी भी प्रकार से वायु पर भ्रमण कर सकेगा। परन्तु विज्ञान की उन्नति ने कितनी असम्भव मानी जाने वाली बातों को सम्भव कर दिखलाया है। उन्हीं में से एक यह भी है। अब किसी को भूल कर भी यह कहने का साहस नहीं होता कि मनुष्य वायु पर नहीं उड़ता क्योंकि अनेकानेक त्रुटियों के होते हुए भी, अभी लोग कई सौ कोस तक बराबर वायुयानों के द्वारा भ्रमण करने लगे हैं।

वायु में उड़ने वाली कृत्रिम वस्तुओं में सब से साधारण और सरल गुब्बारा है। लोगों का विश्वास है कि पहले पहल गुब्बारा चीन में निकला था। गुब्बारे हमारे यहाँ विवाहों में बहुत उड़ाये जाते हैं। एक पतला गिलाफ़ सा होता है जिसके भीतर आग जलती रहती है। इस आग के कारण भीतर की वायु तप्त होकर हल्की हो जाती है। और ऊपर को उठती है।

इसके साथ गुब्बारा भी ऊपर को उठता है। अच्छे गुब्बारे पतले रेशम के बनाये जाते हैं और कागज़ से हल्के होते हैं।

केविंडिश नामक एक विद्वान् ने एक नये गैस हाईड्रोजन का पता लगाया। यह वायु से १४ गुना हल्की होती है, अर्थात् एक घड़े वायु का जितना तोल होगा उतना तोल १४ घड़े हाईड्रोजन का होगा। इस पदार्थ के ज्ञान के पश्चात् योरप में गुब्बारे उसी से भरे जाकर बनाये जाने लगे, क्योंकि अधिक हल्के होने के कारण यह बहुत ऊपर जाते थे और सुगमता से उड़ सकते थे। पहले पहल इस प्रकार के गुब्बारे में एक टोकरी सी बनाकर उसमें एक भेड़, एक मुर्गा और एक बतक बैठाकर उड़ाये गये। इसके उपरान्त मनुष्यों ने भी उड़ना आरंभ कर दिया और इस प्रकार के गुब्बारे में लोग कई सौ मील तक जाने का धीरे-धीरे साहस करने लगे।

बहुत ऊँचे जाने पर विचित्र दशा होती है। नाड़ी जो यहाँ प्रति मिनट ७० या ८० बार चलती है, वहाँ पर सौ बार से भी अधिक चलती है। मुँह और नाक से रक्त जाने लगता है और

अत्यन्त शीघ्र-शीघ्र लेना पड़ता है। सर्दी बड़ी कड़
होती है, और लोग इन सब कठिनाइयों के कारण
प्रायः अचेत हो जाते हैं और कभी कभी कुछ
दिनों के लिए रुग्ण हो जाते हैं। लड़ाइयों में इन
गुब्बारों ने बड़ा काम दिया। शत्रु की सेना को
ऊपर ही ऊपर पार करके इनके द्वारा पत्र भेजे
जाते थे और शत्रु की सेनाकी सामग्रियों का भी
निरीक्षण हो सकता था।

परन्तु इनमें एक बड़ी त्रुटि थी। इनमें कोई
ऐसी शक्ति न थी जिससे कि ये वायु वेग के विरुद्ध
ले जाये जा सकें। जिधर को वायु का प्रवाह होत
था उधर को ये उड़ जाते थे। अतः इन पर जो
लोग आरूढ़ रहते थे वे स्वतन्त्र न रहकर वायु के
दास होते थे। इस बात का बहुत दिनों तक
प्रतीकार न मिल सका। परन्तु जब मोटरकार
बने तो लोगों को यह विचार उत्पन्न हुआ कि ये
गुब्बारे भी हल्के, किन्तु पवन-एञ्जिन द्वारा चलाये
जायँ। बस इन्हीं गुब्बारों को जो एञ्जिन द्वारा
चलाये जाते हैं और वायु-प्रवाह से स्वतन्त्र होते
हैं एयरशिप या वायुपोत (हवाई जहाज़) कहते
हैं। ये प्रायः सिगार के रूप के होते हैं और

इनमें फ़ौलाद या एलुमिनियम (एक धातु जिसके आज कल बर्त्तन बहुत बिकते हैं) के हलके हलके दण्डों की गाड़ियाँ लगी होती हैं । इन्हीं में लोग बैठते हैं । इस धातु के दण्डों के ऊपर रेशम की खोल चढ़ी रहती है । इन पोतों में कई कमरे होते हैं और ये इस प्रकार बने होते हैं कि यदि इनमें से किसी में कहीं एक छिद्र भी हो जाय तो पोत सहसा नीचे न गिरे, प्रत्युत धीरे धीरे नीचे उतरे ।
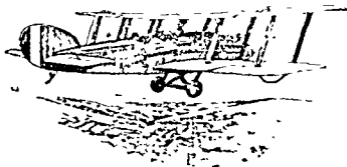
हवाई जहाज़

एक और प्रकार का वायुयान भी प्रचलित है । लोग यह देखते थे कि चिड़ियाँ अपने परों की की सहायता से उड़ती हैं और यह विचार होता था कि मनुष्य भी किसी प्रकार का कृत्रिम पर

लगा कर उड़े। इसका प्रयत्न किया भी गया परन्तु यथेष्ट सफलता प्राप्त न हुई। मनुष्य की रगों में इतनी शक्ति नहीं कि वह अपने भारी शरीर को वायु में देर तक सँभाल सके। तब लोगों ने ऐसे वायुयानों के बनाने का विचार किया जो चिड़ियों के प्रकार पर रखते हों। अन्त में अर्विल और विल्बर राइट नामक दो भाइयों ने इस प्रकार का परयुक्त एक यान प्रस्तुत किया। इस प्रकार के वायुयान को एयरोप्लेन या वायुयावक कहते हैं।

इन वायुयानों के द्वारा मनुष्य ने एक ऐसी सड़क निकाली है जो कि कभी बिगड़ती ही नहीं, और उन्होंने अपने लिये एक बड़ा ही दुर्जय राज्य उपार्जित कर लिया है।

अभ्यास

१—गुब्बारे के विषय में तुम क्या जानते हो? यह क्यों ऊपर उठता है?

२—संसार में सबसे पहले गुब्बारे में कौन उड़ा था?

३—वायु-यान का आविष्कार किसने किया?

४—वायु-यान में क्या दोष अब भी रह गये हैं?

५—वायु-यान कौनसी सड़क पर चलता है?

६—जो चित्र इस पाठ के साथ आया है उसका वर्णन करो।

·रेलगाड़ी पर एक छोटा सा निबन्ध लिखो।
·निम्नलिखित शब्दों में लिंग बताओ—
हाथी दही रानी, भेड़, छिद्र।

पाठ ३६

जीव-दया

(१)

शीघ्र हटा लो चपल चरण को,
कुचल न जावे कीट अधीन।
घृणा तुम्हें जिससे है वह तनुभी,
प्रभु-कृत है ए मतिहीन॥

(२)

जगत-मात्र के परम पिता से,
जीवन तुम ने पाया है।
उसी ईश ने अगम दया का,
इस पर भोग बहाया है॥

(३)

पिता लिये कर रवि-शशि तारे,
सब के लिए बनाये हैं।
सभी साज तेरे हित उस ने,
पृथ्वी पर फैलाये हैं॥

कनारी द्वीपों* में पानी की बड़ी कमी है। वहाँ न नदी है, न तालाब है। आश्चर्य तो इस बात का है कि वहाँ पानी भी कम बरसता है। किन्तु वहाँ जगह-जगह पर ऐसे पेड़ हैं जिनसे रात्रि के समय पानी बरसता है। यह पानी इतना अधिक होता है कि वहाँ के निवासियों को जल के अभाव का कोई कष्ट नहीं होता। यही नहीं, इन वृक्षों के नीचे जो जलधारा बह निकलती है उससे आस पास के खेत सिंच जाते हैं, जिनमें अनेक प्रकार के धान्य पैदा होते हैं। इस वृक्ष की ऊँचाई ३०-३५ हाथ होती है, लकड़ी भी पुख्ता होती है। रात्रि में इसके ऊपर बादल दिखाई देते हैं।

अमरीका में एक और अद्भुत प्रकार का वृक्ष देखा गया है। इसके पत्ते सदा उत्तर और दक्षिण दिशा में स्थिर रहते हैं। इससे वहाँ के निवासियों को दिशा का ज्ञान करने में कोई कठिनाई नहीं होती।

महान्‌ महासागर में टापुओं का एक समुदाय है। इसके किसी किसी टापू में एक वृक्ष

* ये द्वीप अटलांटिक महासागर के पश्चिम में [illegible] हैं।

अल्प दिनों का सुख लेने दो,
पाने दो परिमित आनन्द ।
जो जीवन नहिं दे सकता है,
क्यों उस को लेता मतिमन्द ?

अभ्यास

तीसरे और चौथे छन्दों के अर्थ लिखो।
चपल, मतिहीन, स्रोत, परिमित और मतिमन्द शब्दों के अर्थ बताओ।
म का शुद्ध रूप बताओ।
स पाठ से क्या शिक्षा मिलती है ?

पाठ ३७

अद्भुत वृक्ष

साधारण तौर से यह किसी
हो सकता कि वृक्ष भी
सकते हैं। विश्वास हो चाहे
न संसार में अद्भुत वृक्ष
र्णन हम नीचे दे रहे हैं
हाल जान कर हम

सकती है। प्राचीन समय में नारियल के वृक्ष को देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ था। जब अकबर बादशाह का मन्त्री अबुलफ़ज़ल बङ्गाल से लौट कर सम्राट् के पास पहुँचा तब उसने कहा था—महाराज बङ्गाल के ऐश्वर्य का क्या कहना। वहाँ के वृक्षों में रोटियाँ फलती हैं और मीठा शरबत निकलता है।

दक्षिण-अमरीका में एक और अद्भुत वृक्ष होता है। इसके तने में छेद करने से दूध के समान मीठा और पुष्टिकर रस निकलता है। इसकी पत्तियाँ चमड़ा जैसी चिमड़ी होती हैं। सवेरा होते ही वहाँ के लोग उस वृक्ष के पास जाकर उसका रस ले आते हैं। वे वृक्ष के तने पर कुल्हाड़ी से काट देते हैं, जिससे रस बहने लगता है। यह रस वहाँ वालों को ठीक दूध का काम देता है। इसको सुखा कर इसकी रोटी भी बनाई जाती है। यहाँ एक दूसरे वृक्ष के गूदे से उत्तम मक्खन निकलता है। लोग इसको एकत्र करके आनन्द के साथ खाते हैं।

भगवान् ने क्यों किसी किसी देश में ऐसे अद्भुत वृक्ष पैदा किये हैं, इसका ठीक-ठीक कारण समझ में नहीं आता।

होता है जिसमें खरबूजे के समान फल लगते हैं। इनके भीतर बहुत ही स्वादिष्ट मीठा गूदा होता है। वहाँ के निवासी इसे भूनकर खाते हैं। कहते हैं कि उनका गूदा भुन कर रोटी की ही भाँति सफ़ेद और मुलायम हो जाता है। वर्ष में आठ महीने तक यह वृक्ष बराबर फल दिया करता है। वहाँ के निवासी इन्हीं फलों को खाकर अपना निर्वाह करते हैं। उसका छिलका भी व्यर्थ नहीं जाता। वह कपड़ा बनाने के काम में आता है। वास्तव में वृक्ष वहाँ वालों के लिए कल्पवृक्ष* से कम नहीं है।

दक्षिण-अमरीका के एक वृक्ष की कथा सुनो। इसके बीज में कई तहें रहती हैं। पहली तह हाथी दाँत के समान उज्वल होती है। उस से बटन इत्यादि अनेक वस्तुएँ बनती हैं। दूसरी तह कोमल और स्वादिष्ट गूदे की होती है। इसके भीतर इतना पानी भरा रहता है कि उससे तीन-चार आदमियों की प्यास बुझ सकती है। हमारे देश के नारियल के वृक्ष से इसकी तुलना हो

* एक प्रकार का वृक्ष जिस के विषय में यह विश्वास है कि इससे जो वस्तु माँगी जाय वही यह दे देता है।

फ्राँस, स्पेन और पुर्तगाल में एक जाति के
होते हैं जिनकी छाल डाट बनाने के काम
नी है। यह वृक्ष ३० से ४० फुट ऊँचा होता
। इसके तने का व्यास २ से ३ फुट होता है।
य वृक्ष पाँच वर्ष का हो जाता है तब इसकी
ाल निकाली जाने लगती है। जिससे छाल
िकालने से वृक्ष की कोई हानि नहीं होती, उलटा
ह अधिक समय तक जीवित रहता है। सौ से
डेढ़-सौ वर्ष तक के वृक्ष पाये गये हैं। परन्तु
पचास-साठ वर्ष के पुराने वृक्षों की छाल की डाट
अधिक अच्छी होती है।

अभ्यास

१—कनारी टापुओं में कौन से विचित्र वृक्ष पाये जाते हैं ?
२—दक्षिण अमेरिका के अद्भुत वृक्षों का वर्णन करो।
३—डाट कैसे बनता है ?
४—मरु-भूमि और हरे-भरे मैदानों में क्या अन्तर होता है ?
५—उपवन, निष्कर्ष, पुष्टिकर और असमंजस शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।
६—एक लेख अद्भुत जीव-जन्तुओं पर लिखो (जैसे, ह्वेल, गेंडा, घोंघा, ऊँट आदि)।
७—नीचे लिखे शब्दों के विशेषण बनाओ.—
विचार, कठिनाई, स्थान, विश्वास, जंगल।